।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या-
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष–17 अंक–15/16 कार्तिक शु. 8 से मार्गशीष शु. 8 सं. 2075 वि. 16 नवम्बर/ 01 दिसम्बर 2018 अमरोहा, उ.प्र. पृष्ठ–16 प्रति–5/–

धूमधाम से मना आर्यों के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह का अमृत महोत्सव

रामचरण गुप्ता
नई दिल्ली।

अमृत महोत्सव के अवसर पर आर्यजगत के विद्वानों व विदुषियों को सम्मानित करते आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह- केसरी

क्षत्रियों के गौरव, आर्यों के भामाशाह आर्यरत्न नेता श्री ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ को इंडिया इंटरनेशनल, लोधी स्टेट, नई दिल्ली में मनाया गया। इस भव्य समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने की। मंच का संचालन डॉ. धर्मेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। देश के विभिन्न प्रांतों से आए आर्यजगत के बड़े–बड़े ख्याति प्राप्त संन्यासी, विद्वान, धर्माचार्य, आचार्य/आचार्या, भजनोपदेशक/उपदेशिका आदि को आर्यन परिवार के द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव में सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस समारोह में देश के विभिन्न स्थानों से आए करीब 75 सम्मानित गणमान्यों को भेंट स्वरूप एक–एक शॉल, बिस्कुट, किताबें और चैक राशि दक्षिणा स्वरूप देकर सम्मानित किया गया।

ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा अपना अमूल्य जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर वैदिक धर्म, मानवता और राष्ट्र की महती सेवा में लगाने के संकल्प को अद्वितीय संकल्प मानते हुए विभिन्न प्रांतों से आए महानुभावों ने आर्य समाज में आर्यन परिवार की ओर से आयोजित ठाकुर विक्रम सिंह जी के जिंदगी के 75 वर्ष पूरे होने पर जन्मदिन के रूप में आयोजित अमृत महोत्सव को युगों–युगों तक याद रहने वाला कार्यक्रम बताया। इस अविस्मरणीय अमृत महोत्सव में आर्यन परिवार का खुशी देखते ही बनती थी। कुं प्राज्ञ आर्य, कुं. राहुल आर्य, कुं. इंद्रवीर आर्य, डा. वरूणवीर के उद्बोधन को सुनने के लिए लोगों में भारी उत्साह था। डॉ. वरूणवीर के अनुसार यह यादगार पल जीवन में बार–बार आए और आर्य समाज, वैदिक प्रचार–प्रसार के लिए मिलजुलकर भविष्य में काम करते रहे, यही आशा है। डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी और श्याम जाजू ने ठाकुर साहब के अमृत महोत्सव पर दीर्घ जीवन हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रदान कीं।

कार्यक्रम में विशेष रूप से डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी, श्याम जाजू व डॉ. वेदप्रताप वैदिक की उपस्थिति मंच पर शोभायमान थी। महानुभावों ने अपनी–अपनी उपस्थिति दर्शाते हुए अपने–अपने विचारों से सभी का मनोबल बढ़ाया तथा महानुभावों ने अपने–अपने संदेश में ठाकुर विक्रम सिंह के जीवन के महत्वपूर्ण 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव को युगों–युगों तक याद रहने और आने वाली नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानंद जी ने ठाकुर विक्रम सिंह को दीर्घायु होने का आशीर्वचन प्रदान किया। समारोह के पश्चात् सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। सभी प्रांतों से आए महानुभावों ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

भव्यता से हुआ चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ व सम्मान समारोह

पी.सी. मित्तल
कोटा (राजस्थान)।

कोटा में आयोजित चतुर्वेद शतकम महायज्ञ, संगीतमय वेदपाठ एवं वेद प्रवचन का भव्य दृश्य- केसरी

आर्य समाज कुन्हाड़ी, कोटा द्वारा चार दिवसीय चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ वेदमंत्रों का पद्य रूप में संगीतमय वेदपाठ, वेदोपदेश व 31 जीवित पितरों (75 वर्ष से उपर वाले) का श्रद्धापूर्वक सेवा सम्मान समारोह (श्राद्ध–तर्पण) दिनांक 27 सितम्बर 2018 गुरूवार से 30 सितम्बर 2018 रविवार तक कुन्हाड़ी स्थित थर्मल कॉलोनी क्लब बिल्डिंग में आयोजित किया गया।

आर्य समाज कुन्हाड़ी के प्रधान पी.सी. मित्तल (मो. 9413349836) ने बताया कि कार्यक्रम प्रतिदिन दोपहर 1 बजे से सायं 5:30 बजे तक चला। प्रतिदिन दोपहर 1 बजे से 2:30 बजे तक एक–एक वेद के 100–100 मंत्रों से 16–16 यजमान (जोड़ों) ने 4 यज्ञ वेदियों में आहुतियां प्रदान कीं। तथा अंतिम दिन एक यज्ञवेदी और बढ़ाई गई। इस तरह 70 यजमान जोड़े यज्ञ में शामिल हुए। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित बिरधीलाल शास्त्री रहे।

नियमित यज्ञ के उपरांत उसी वेद के 100 वेदमंत्रों का पद्य रूप में संगीतमय वेदपाठ बल्लभमुनि वानप्रस्थी (छत्तीसगढ़) द्वारा कराया गया, जिसका श्रोताओं ने बड़ा आनंद लिया। सभी श्रोताओं को वेदमंत्रों के पद्यरूप वाली पुस्तक पढ़ने को प्रदान की गई, जिसकी स्वयं बल्लभमुनि वानप्रस्थी द्वारा रचना की गई है।

चार दिनों में स्वामी शान्तानंद जी सरस्वती द्वारा ईश्वर विषय, सुखी रहने के उपाय, यज्ञ करने के क्या–क्या लाभ व नहीं करने के क्या–क्या हानियां होती हैं, दान करने की महिमा तथा जीवित पितरों के श्राद्ध–तर्पण का स्वरूप कैसा हो? इन विषयों पर व्याख्यान हुए। अंतिम दिन 30 तारीख को नियमित कार्यक्रम के उपरांत वेदविद्वान शिवनारायण उपाध्याय द्वारा पूर्णिमा सत्संग समिति के सहयोग से रचित ''वैदिक ऋृषिकाएं'' पुस्तक का विमोचन डीएवी स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, हिस्ट्री की प्रोफेसर डॉ. कमलेश शर्मा व जिला जज गिरीश अग्रवाल द्वारा किया गया।

वैदिक ऋृषिकाएं पुस्तक के विमोचन के उपरांत 31 जीवित पितरों (75 वर्ष से उपर के) का श्रद्धा पूर्वक सेवा सम्मान (श्राद्ध तर्पण) किया गया। जीवित पितृ श्राद्ध तर्पण के अंतर्गत सभी के पैरों को पानी की परात में धोकर टावल से पौंछा, फिर उन्हें तिलक लगाकर श्रीफल भेंट किया, मिष्ठान खिलाया, गायत्री मंत्र का दुपट्टा, शॉल ओढ़ाकर व महर्षि दयानंद का खूबसूरत चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम में कोटा की समस्त 8 आर्य समाजों, आर्य परिवार संस्था, कोटा, आर्य समाज बूंदी, आर्य समाज खेडारसूलपूर, आर्य समाज के अतिरिक्त थर्मल कॉलोनी के निवासियों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा उत्तर विधायक प्रह्लाद गुंजल रहे। कार्यक्रम में मुख्य रूप से मंत्री डी. एल. आर्य, उप प्रधन नंदकिशोर राठौर, कोषाध्यक्ष भीमराव महावर, संरक्षक राजेंद्र सक्सेना, डी.पी. मिश्रा, महिला संयोजिका श्रीमती विष्णुप्रिया जी, सरोज मित्तल, सुनीता आर्या, पुष्पा मित्तल, ललिता राठौर, विमला महावर, देवीशंकर, जी.सी. गुप्ता, आर.सी. आर्य, राधावल्लभ राठौर, राजेंद्र आर्य, रामजीलाल बैरवा, एस.पी. माथुर, एम. डी. पिल्लई के साथ–साथ तकरीबन 600 व्यक्तियों ने भाग लिया। अंत में सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

ठाकुर विक्रम सिंह ने की 'वैदिक सिद्धांत रक्षक मण्डल' की स्थापना

सुमनकुमार वैदिक
दिल्ली।

विगत 19 अक्टूबर को लाजपत राय के निवास पर आयोजित बैठक में ठाकुर विक्रम सिंह द्वारा वैदिक सिद्धांत रक्षक मण्डल की स्थापना की गयी, जिसके द्वारा वैदिक सिद्धांतों की रक्षा में संलग्न तपस्वी ऋषिभक्त पर किसी भी प्रकार के विधर्मी आक्रमण की दशा में उनकी एवं उनके परिवार की हर प्रकार से सहायता की जाएगी। उनका कहना है कि इस मण्डल के सदस्य बनकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सजग हों तथा वैदिक प्रचार में लगे बन्धुओं को रक्षा कवच प्रदान करें।

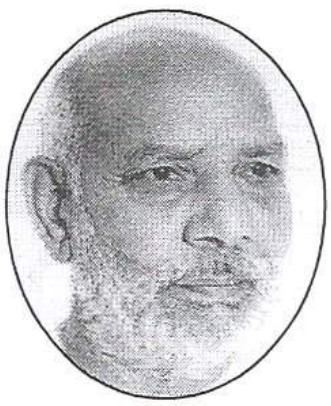

ज्ञातव्य है कि सत्यार्थ प्रकाश न्यास के वार्षिकोत्सव पर उदयपुर में अमर स्वामी प्रकाशन के लाजपत राय अग्रवाल को योजनाबद्ध ढंग से पुलिस में रिपोर्ट कराकर उदयपुर के वार्ड 14 के सदस्य रशीद खां तथा कुछ अन्य ने 8 अक्टूबर को गिरफ्तार करा दिया, जिनकी जमानत के लिए लाजपतराय के स्वयं के प्रयास से हरिओम व्यास एवं रमेश जी ने जमानत ली। विक्रेता समूह जो महर्षि दयानन्द के साहित्य का प्रचार करता है, अपने को असुरक्षित अनुभच कर रहा है, जिसकी रक्षा में आर्यसमाज के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह एक बार पुन: आगे आये। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

आर्य समाज के प्रचार में संलग्न पुस्तक विक्रेता अपने घरों से दूर साहित्य को बड़ी कठिनाई से लाकर आर्य समाजों के उत्सवों की शोभा बढ़ाते हैं तथा इस कार्य के लिए किसी प्रकार के दान या सम्मान भी नहीं लेते हैं। कई बार तो किराया भी नहीं निकलता। किंतु फिर दूसरे उत्सव में जाने के लिए चल देते हैं। आर्य समाज, जिस प्रकार उत्सव पर विद्वानों को बुलाकर मार्ग व्यय और दक्षिणा देता है, उसी प्रकार इन्हें मार्ग व्यय तो अवश्य देना चाहिए।

कालजयी ग्रन्थ है सत्यार्थ प्रकाश

अमरोहा। आर्यसमाज में रविवारीय कार्यक्रम प्रात: 8:30 बजे मनोहर लाल आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर अभय आर्य, राजनाथ गोयल, विनय प्रकाश आर्य, सुभाष दुआ, अंकित आर्य आदि यजमान रहे। यशवन्त सिंह ने ईश भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। हेतराम सागर ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का वाचन करते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से समस्त भ्रांतियां मिट जाती हैं।

कार्यक्रम में प्रधान नत्थू सिंह आर्य सहित मुकेश चन्द गोयल, विनय त्यागी, दिनेश चन्द रस्तौगी, विश्वदेव रस्तौगी, मनोहर लाल आर्य, कृष्णचन्द गोयल, नरेन्द्रकान्त गर्ग व डिम्पल राठी आदि उपस्थित रहे।

धूमधाम से मना स्थापना दिवस

पूठ (गढ़मुक्तेश्वर)। गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ, निकट गढ़मुक्तेश्वर (हापुड़) का दो दिवसीय स्थापना दिवस एवं वेदारम्भ संस्कार महोत्सव 8 व 9 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सहित आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान, महात्मा, नेता एवं भजनोपदेशकों ने उपस्थित जनों को धर्मलाभ पहुंचाया। स्वामी प्रणवानन्द की अध्यक्षता में सामवेद पारायण यज्ञ भी हुआ।

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है।

-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : **8630822099**

अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस पर हुआ भव्य समारोह

वरिष्ठ नागरिक राष्ट्र की ही नहीं अपितु विश्व की अमूल्य धरोहर : डॉ. अशोक

ठाकुर जसवंत सिंह
बिजनौर (उ.प्र.)।

बिजनौर। अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस पर बिजनौर की वरिष्ठ नागरिक समिति (संगठन) द्वारा भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विगत अनेक वर्षों से यह संगठन समाज को विभिन्न सुविधाएं प्रदान कर रहा है। समिति द्वारा नि:शुल्क योग प्राणायाम व हास्ययोग की नियमित कक्षाएं (बिजनौर क्लब में) तथा स्योहारा में देवरा चिकित्सालय में, कमला नर्सिंग होग नजीबाबाद में तथा बिजनौर में लोकसमाज केन्द्र में संचालित की जा रही हैं। बिजनौर लोकसमाज केन्द्र में फिजियोथैरेपी द्वारा चिकित्सा व्यवस्था के साथ-साथ प्रत्येक रविवार को प्रात: 7 बजे से 156 सिविल लाईन, निकट जजी चौराहे पर शुगर व ब्लड प्रेशर की नि:शुल्क जांच, बैंक सेवा व चिकित्सा सुविधा आदि में वरीयता के शासकीय आदेशों के अनुपालन की व्यवस्था, विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ चिकित्सकों से समय-समय पर नि:शुल्क परामर्श की व्यवस्था, प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को एलोपैथिक, आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक चिकित्सकों द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श। वरिष्ठ नागरिकों के स्वस्थ जीवनयापन व मान-सम्मान के लिए जनपद के विभिन्न स्थानों (स्योहारा, नजीबाबाद, बिजनौर आदि) में गोष्ठियां, एक अक्टूबर अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक दिवस पर भव्य आयोजन, प्रत्येक वर्ष फरवरी में जनपदीय स्तर पर खेलों का आयोजन, देश तथा विदेशों में यदाकदा भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन, सदस्यों का जन्मदिन मनाना, संगठन के सदस्यों की समस्याओं के निराकरण में सदैव तत्पर, इसके लिए राज्य तथा भारत सरकार से नियमित पत्र व्यवहार तथा अन्य अन्य कार्य समिति द्वारा किये जा रहे हैं।

गरिमामय कार्यक्रम में आर्यावर्त केसरी के प्रधान सम्पादक डॉ. अशोक आर्य ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक राष्ट्र की ही नहीं, अपितु विश्व की अमोल धरोहर हैं। 'चिंगारी' हिन्दी दैनिक के सम्पादक डॉ. सूर्यमणि रघुवंशी ने कहा कि बुजुर्ग परिवार की रीढ़ होते हैं, इनका सम्मान होना चाहिए। जिन परिवारों में वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान नहीं होता है, वे परिवार राष्ट्र के लिए कलंक हैं। अत: सन्तानों को माता-पिता की सेवा और सम्मान करना चाहिए।

कार्यक्रम में पधारे जिला पंचायत अध्यक्ष साकेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों के अनुभवों से हमें सीख लेनी चाहिए। आर्यनेता व समाज सुधारक जयनारायण अरुण ने वरिष्ठ नागरिक समिति के क्रिया-कलापों का विवरण देते हुए समिति की आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला। जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज, अमरोहा की हिन्दी विभाग की एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. बीना रुस्तगी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वृद्धावस्था में संतानें माता-पिता की सेवा करें, यह संस्कार प्रारम्भ से ही बच्चों को देना होगा। तभी वह राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक बन सकेंगे। धामपुर शुगर मिल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी संदीप कुमार शर्मा ने देश में बढ़ रही वृद्धाश्रमों की स्थापना की संस्कृति पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने यह भी घोषणा की कि अगले वर्ष उन वरिष्ठ नागरिकों को लखनऊ से दिल्ली तक की हवाई यात्रा करायेंगे। भारतीय प्रेस परिषद के सदस्य एवं बिजनौर टाइम्स के सम्पादक चन्द्रमणि रघुवंशी, ओमपाल सिंह पूर्व मंत्री, जितेन्द्र कुमार, फारूख बिजनौरी आदि ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर कस्तूरबा विद्यालय, किरतपुर की बालिकाओं ने मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। महासचिव द्वारा समिति की वार्षिक आख्या प्रस्तुत की गयी। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी असहाय अनार्थ जनों को अन्नदान किया गया। कार्यक्रम के दौरान एमबीबीएस द्वितीय वर्ष की छात्रा मितीशा रुस्तगी की लघु नाटिका का लोकार्पण किया गया। नाटिका की विषयवस्तु की सभी ने सराहना की। कार्यक्रम के अन्त में अध्यक्ष ठा. जसवंत सिंह ने संस्था की ओर से मंचासीन अभ्याजनों को शॉल ओढ़ाकर व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया तथा समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त किया। महासचिव डॉ. चन्द्र प्रभा गौतम ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने की अमर स्वामी प्रकाशन के स्वामी लाजपत राय की मदद

सुमनकुमार वैदिक
गाजियाबाद (उ.प्र.)।

लाजपतराय (अमर स्वामी प्रकाशन) के साथ उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में घटी घटना के कारण आर्य जगत ने उनको सहयोग देने के लिए ठाकुर विक्रम सिंह की अध्यक्षता में वैदिक रक्षा मण्डल की स्थापना की गयी। ऋषि उद्यान अजमेर में लाजपतराय जी को सम्मानित किया गया। आर्यावर्त केसरी के प्रबन्ध सम्पादक सुमन कुमार वैदिक को लाजपतराय जी के साथ विकट परिस्थिति में साथ देने तथा हरिओम व्यास, जिनके द्वारा लाजपतराय जी की जमानत ली, उन्हें भी सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड द्वारा मुकदमा लड़ने के लिए एक लाख रुपये तथा घटना के पश्चात् खोई पुस्तकों के लिए पचास हजार रुपये की राशि भेंट की।

लाजपतराय जी की सहायता के लिए आगे आयी दिल्ली सभा की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। हम सभी आर्यों को एकजुटता दिखाकर उनका साथ देना चाहिए।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि वह सदैव की भांति निडरता के साथ आर्य समाज की निरंतर सेवा करते रहेंगे।

वेदोपदेश के प्रतिकूल नहीं अनुकूल चलें : श्रद्धानन्द

समारोहपूर्वक हुआ ६१वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज फरीदाबाद का 61वां वार्षिकोत्सव 12 से 18 नवम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द (गुरुकुल गोमत, अलीगढ़) ने वेदमंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि हम सुने हुए वेदोपदेश के अनुकूल चलें, उसके प्रतिकूल न चलें।

आचार्य डॉ0 हरिओम शास्त्री (फरीदाबाद), आचार्य राजू वैज्ञानिक, आचार्य जयेन्द्र नोएडा ने भी प्रवचनों के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया। संदीप आर्य के भजनों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके साथ विभिन्न परिवारों में पारिवारिक सत्संग कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर 51 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन भी किया गया।

संक्षिप्त समाचार

- 15 से 18 नवम्बर- आर्य समाज, मुल्ताननगर का उत्सव सम्पन्न।
- 18 से 25 नवम्बर- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, रामलीला मैदान, राजनगर, गाजियाबाद, द्वारा- गुरुवचन शास्त्री।
- 20 नवम्बर- दुग्धाहारी आश्रम, बहादुरगढ़ का उत्सव।
- 20 से 23 नवम्बर- आर्य समाज, टाण्डा का उत्सव।
- 22 से 25 दिसम्बर- आर्य समाज भुवनेश्वर (उड़ीसा) का वार्षिकोत्सव।

हरियाणा के मेवात क्षेत्र में हुआ आर्य समाज का चतुर्दिवसीय वेदप्रचार

शमशेर सिंह
पुन्हाना (मेवात) हरियाणा।

ज्ञातव्य है कि पंजाबी बारात घर ४ दिनों का लिया गया, जिसके विशाल हाल में प्रत्येक दिन प्रातः व सायं श्रद्धालुओं की पर्याप्त उपस्थिति में हस्तिनापुर मेरठ के नवोदित भजनोपदेशक पंडित अजय आर्य व उनकी भजन मंडली के लगभग 1 से डेढ़ घंटा भजन होते रहे। कुछ दिवंगत आर्यसमाजी महानुभावो के परिवार का कई वर्षो से आर्यसमाज मंदिर पर अनाधिकृत कब्ज़ा होने से कर्मशील आर्यो को कहीं बाहर उत्सव करना पड़ता है। पंडित अजय जी प्रत्येक सत्र में अलग अलग विषयों, जैसे आर्योद्देश्य रत्नमाला, स्त्री का समाज निर्माण में योगदान, देशभक्ति व ऋषि दयानन्द आदि से संबध्द भजन सुनाते हुए विषय को स्पष्ट करते थे बाद में होशंगाबाद (मध्य

चतुर्दिवसीय वेदप्रचार में उद्बोधन करते आचार्य आनन्द पुरुषार्थी- केसरी

प्रदेश) के आचार्य आनन्द पुरूषार्थी का किसी आध्यत्मिक विषय पर लगभग एक सवा घण्टे उपदेश होता था। आचार्य के वेदमंत्रों पर आधारित प्रवचन के मुख्य विषय रहे। गृहस्थ आश्रम के 3 ऋण, हमारा वेदों के अनुसार परिचय व कर्तव्य, आचमन मन्त्रों का रहस्य व सुख प्राप्ति के उपाय, वसो : पवित्रमसि शतधारम् मन्त्र की व्याख्या.... आदि।

२८ सितम्बर को पुन्हाना के प्रसिद्ध राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मध्य पुरुषार्थी जी का उपदेश हुआ, जिसमें मुस्लिम कन्याओं की संख्या भी पर्याप्त थी। २९ सितम्बर को आर्यसमाज के गोस्वामी के अपने स्वामी विवेकानंद सीनीयर सेकेंडरी विद्या पीठ स्कूल के स्टाफ में शिक्षक का लक्ष्य व उसके प्रभाव परिमाण विषय पर प्रेरणास्पद व्याख्यान हुआ। अंतिम दिन 30 सितम्बर रविवार को प्रातः अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक संख्या में श्रद्धालुओं की उपस्थिति थी। पूरे मेवात के अनेकों आर्य समाजों से जनता जनार्दन आई थी। फलस्वरूप पूरा परिसर खचाखच भरा हुआ था। 33 यज्ञकुण्डों में चारो तरफ से १२५ सपत्नीक यजमान दम्पती विराजमान थे। पूरे पूर्णाहुति प्रोग्राम का फेस बुक से सीधा प्रसारण आर्य परिवार की बेटी कुमारी रश्मि सैनी (नगीना) ने किया।

अंतिम दिन ऋषि लंगर में 700 जनों के भोजन की व्यवस्था आर्यो ने की थी। प्रत्येक सायंकालीन सत्र में अतिथि के रूप में कस्बे के किसी गणमान्य व्यक्ति का आगमन होता था, जो अंत में अपनी सद्भावना भी व्यक्त करते थे। इनमें हरियाणा गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष सर्वश्री भानीराम मंगला, मार्केट कमेटी के अध्यक्ष उमेश आर्य, मेवात आर्य वेद प्रचार मंडल के अध्यक्ष सुभाष सिगला, ताराचंद गोयल उद्योगपति आदि मुख्य थे।

कार्यक्रम का संचालन वेद प्रचार मंडल के पूर्व प्रधान दुलीचन्द वाजपेयी जी करते थे। उन्होंने सभी को बताया कि ग्राम में प्रतिदिन प्रातः काल 7 से 8 बजे तक किसी न किसी के घर यज्ञ २ वर्ष से चल रहा है जिसकी वाट्स अप से प्रतिदिन सूचना दी जाती है। अगर कोई महानुभाव अपने घर प्रातः यज्ञ सत्संग करवाना चाहे तो हमसे संपर्क कर सकते है। इस पूरे सत्संग में क्षेत्र के ग्राम बीसरू, गुलालता, सिहरी, मल्हाका, बॉस दल्ला, लुहिंगाकलाँ, नगीना, नूह, फिरोजपुर झिरका के आर्य समाजों व स्थानीय आर्य निर्मात्री सभा के युवकों ने भी विशेष सहयोग दिया। प्रधान श्रीराम आर्य ने सभी का धन्यवाद किया।

आर्यवन रोजड़ में उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवन रोजड़ (गुजरात)। दर्शन योग महाविद्यालय में 18 से 23 सितम्बर तक उच्चस्तरीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया । इस शिविर में भारत के विभिन्न (09) प्रान्तों के 48 शिविरार्थियों ने तथा अनेक श्रोताओं ने भाग लिया।

शिविर में दर्शन शास्त्रों के साधना के लिए महत्वपूर्ण सूत्रों की व्याख्या, शंका समाधान तथा यज्ञोपरान्त वेदमन्त्र व्याख्यान शिविराध्यक्ष पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक द्वारा किया गया। विशेष ध्यानाभ्यास स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक ने सम्पन्न कराया। विवेक–वैराग्य अभ्यास के विषय को आचार्य ईश्वरानन्द ने रोचक शैली में प्रस्तुत किया। गम्भीर निदिध्यासन के सिद्धान्त और विधि, आचार्य प्रियेश जी ने बतलाई। उच्च साधक को आत्मनिरीक्षण 'किस

रोजड़ में आयोजित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर में मंच का एक भव्य दृश्य- केसरी

प्रकार से करना चाहिए'? यह विषय आचार्य सत्यजित् ने प्रस्तुत किया। आचार्य दिनेश तथा अध्यापक रमेश एवं कुलदीप ने शिविर के व्यवस्था, संचालन में विशेष सहयोग प्रदान किया। आसन–व्यायाम प्रशिक्षण इंदौर के श्री धर्मेंद्र जी धाकड़ तथा गांधीनगर की बहन वर्षा जी दवे ने दिया।

शिविर मे पढ़ाएँ गए विषयों पर आधारित लिखित परीक्षा आचार्य धर्मवीर 'मुमुक्षु' के निर्देशन में ली गई। शिविर की कुछ कक्षाओं का यूट्यूब (youtube) में लाइव (live) प्रसारण किया गया।

शिविर का समापन 23 सितम्बर को प्रातः 9 से 12 के सत्र में चला, जिसमें शिविरार्थियों ने अपने अनुभव व उपलब्धियां सुनाई। स्वामी सत्यपति परिव्राजक एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम के प्रबन्धक न्यासी आचार्य सत्यजित् एवं आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल की आचार्या शीतल जी के भी प्रेरक उद्बोधन हुए। आर्यवन के प्रधान श्री मनसुख भाई ने बताया कि आश्रम व्यवस्था का पालन करना स्वयं को और परिवार को प्रारम्भ में जहर जैसा लगता है परंतु उसके परिणाम अमृत के समान उत्तम आते हैं। शिविराध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द ने उत्तम प्रेरणाएँ दीं।

शिविरार्थियों ने अपने जीवन में सद्गुणों को धारण करने एवं दोषों को छोड़ने सम्बन्धी अनेक व्रत धारण किए तथा भविष्य में स्वयंसेवक के रूप में विद्या और धर्म की वृद्धि हेतु अनेक संकल्प लिये। शिविर काल में कक्षाओं को छोडकर पूर्णकालिक मौन का नियम था। इस नियम का पालन शिविरार्थियों ने यथासामर्थ्य किया।

शिविर को सफल बनाने हेतु दर्शन योग महाविद्यालय के अध्यापक, ब्रह्मचारी व कार्यकर्ता तथा अनेक स्थानों से आये सहयोगियों ने सराहनीय योगदान दिया। आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट की ओर से आवास, भोजन आदि में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

आर्यवन रोजड़ में आयोजित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर में सहभागी शिवरार्थियों के साथ आचार्यगण- केसरी

आगामी कार्यक्रम

संक्षिप्त समाचार

२ से संगीतमय कार्यक्रम

2 से 6 दिसम्बर तक संगीतमय दिव्यज्ञान कार्यक्रम में भक्तिसंगीत आर्यसमाज हापुड़ में पं0 संजीव रूप द्वारा किया जाएगा।

यज्ञोपवीत संस्कार १ से

1 से 5 दिसम्बर तक त्रिलोकपुरी, नई दिल्ली में 1008 बहुजन यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक सत्संग किया जाएगा। (शशि शर्मा, संपर्क सूत्र- 7678578288)

वार्षिकोत्सव २८ से

आर्य समाज पलवल का वार्षिकोत्सव 28 दिसम्बर से 2 जनवरी तक हुड्डा चौक पलवल में होगा।

२२ से होगा आर्यसम्मेलन

आर्य समाज, बड़ा बाजार, कोलकाता का वार्षिकोत्सव 22 से 30 दिसम्बर तक आयोजित होगा।

वैदिक सत्संग २१ से

20 से 21 दिसम्बर तक वैदिक सत्संग शिविर भुज, कच्छ में स्वामी शान्तानन्द द्वारा, 22 दिसम्बर को काला डूगर, सफेद रण आदि कच्छ के प्रसिद्ध दार्शनिक स्थल का भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। (शिविर शुल्क 1000 रु0। भ्रमण मार्ग व्यय अतिरिक्त।)

२२ दिसम्बर को मकर संक्रान्ति

आचार्य दार्शनेय लोकेश के ब्रह्मत्व में 22 दिसम्बर को उनके निवास- सी-276, गामा प्रथम में सूर्य के उत्तरायण के अवसर पर मकर संक्रान्ति के अवसर पर यज्ञ आयोजित किया जा रहा है।

१२ से होगा उत्सव

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग एवं स्त्री आर्य समाज श्रीगंगानगर में उत्सव 12 से 16 दिसम्बर तक होगा, जिसमें सामवेद पारायण यज्ञ होगा। इसके ब्रह्मा चन्द्रदेव आचार्य, भजनोपदेशक रामनिवास आर्य, पानीपत होंगे। (सम्पर्क सूत्र- 7597894991)

उत्सव ५ से ९ तक

आर्ष गुरुकुल, नोएडा का वार्षिकोत्सव 5 से 9 दिसम्बर तक गुरुकुल परिसर में होगा।

स्थापना दिवस २६ से

स्त्री आर्य समाज वैदिक आश्रम, सिविल लाइंस अलीगढ़ का 49वां स्थापना दिवस समारोह 26 से 28 नवम्बर तक 21 कुण्डीय यज्ञ के साथ होगा। आचार्य वीरेन्द्र के प्रवचन और भीष्म आर्य के भजनोपदेश होंगे।

वार्षिकोत्सव २४ से

24 से 30 दिसम्बर तक आर्यसमाज गंगापुर सिटी (राज0) का वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा, जिसमें आचार्या नन्दिता शास्त्री, कमलापति शास्त्री व शिवकुमार वक्ता होंगे।

वार्षिकोत्सव २६ से

आार्य समाज ए ब्लाक, कालका जी नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 26 से 29 दिसम्बर तक होगा। यह सूचना रमेश गाड़ी प्रधान ने दी। (सम्पर्क सूत्र- 26226176)

वार्षिकोत्सव २६ से

गाजियाबाद (उ.प्र.)। आर्यसमाज राजनगर का 34वां वार्षिकोत्सव 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक सम्पन्न होगा, जिसमें आचार्य विष्णुमित्र और वेदपाल रहेंगे। भजनोपदेश कुलदीप आर्य बिजनौर करेंगे। ध्वजारोहण स्वामी चन्द्रवेश करेंगे।

पलवल में वार्षिकोत्सव

पलवल (हरियाणा)। आर्य समाज मन्दिर जवाहरनगर का 63वां वार्षिकोत्सव 23 से 25 नवम्बर तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द (गुरुकुल मंझावली) के आशीर्वचन के साथ ही मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य संजीव रूप उपस्थित रहेंगे। भजनोपदेश नीतिका आर्या (हरिद्वार) एवं करतार सिंह (हरिद्वार) द्वारा होंगे।

आर्य समाज आनन्द विहार का वार्षिकोत्सव

परिवार और समाज की धुरी नारी : प्रियंवदा

आनन्द विहार (दिल्ली)। आर्य समाज (एल ब्लाक) आनन्द विहार का 43वां वार्षिकोत्सव 14 से 18 नवम्बर को सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वेदविदुषी डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती ने गुरुकुलीय शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा आठ सत्य और आठ झूठ की व्याख्या की। यज्ञ में वेदपाठ कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद की छात्राओं ने किया। 14 नवम्बर को महिला सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें आचार्य कल्पना ने महिलाओं को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सजग होने के लिए कहा।

डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती ने परिवार और समाज की धुरी नारी को बताया तथा वैदिक सिद्धांतों के पालन से जीवन निर्माण के उपायों की व्याख्या की।

टंकारा चलो...

अर्यावर्त केसरी प्रबन्ध समिति के नेतृत्व में

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम- 2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा।
(25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़-** साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम-** चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव-** द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर-** महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ-** वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव-** ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा-** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 10 दिसम्बर 2018 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III o AC II में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए उन्हें रु० 1500/- से रु० 2000/- तक अतिरिक्त धनराशि देनी होगी। इस श्रेणी में रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि।● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो उसकी सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगा। कोटिश: धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)-244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❐ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❐ नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405), ❐ सुमन कुमार वैदिक- सहव्यवस्थापक (09456274350)

अमरोहा आर्य समाज का मनाया ११६वां वार्षिकोत्सव

अभय आर्य, मंत्री
अमरोहा।

11, 12 व 13 नवम्बर को आर्य समाज का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मेरठ से पधारे आचार्य रणवीर सिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में 31 कुण्डीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर रणधीर सिंह शास्त्री ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के नवोदित युवा आर्य भजनोपदेशक आर्य संदीप गिल (मेरठ) ने अपनी ओजस्वी वाणी में ईश्वरभक्ति के सुन्दर भजन प्रस्तुत किये।

यज्ञ के पश्चात् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने प्रवचन करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि हम सभी को महर्षि के चरित्र का अनुसरण करना चाहिए। इसी से समाज व राष्ट्र का कल्याण हो सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मंत्री एवं गुरुकुल पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्यसमाज अमरोहा के 116वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रथम बार तांबे के 31 हवनकुण्डों पर यज्ञ में सम्मिलित होने का अवसर मिला। इसके लिए अमरोहा आर्य समाज के पदाधिकारियों को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रत्येक परिवार में भावी पीढ़ी को चरित्रवान एवं संस्कारित करना चाहता है।

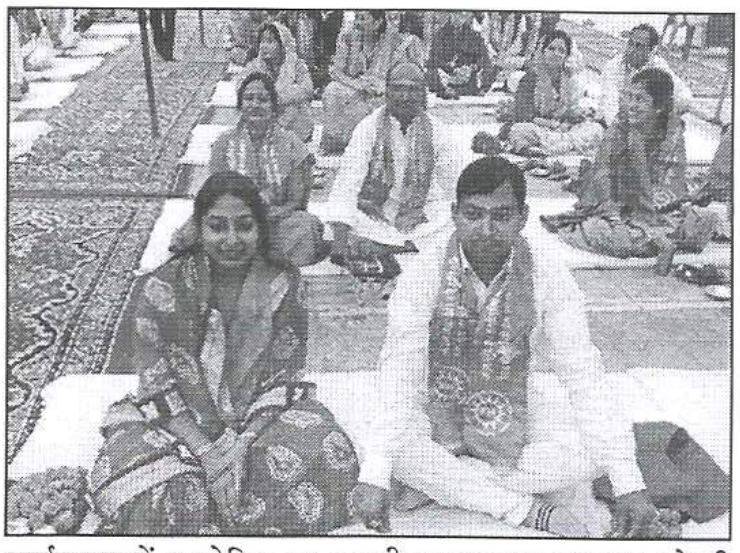

आर्यसमाज में आयोजित ३१ कुण्डीय यज्ञ का भव्य दृश्य- केसरी

महिला परिवार सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. बीना रुस्तगी ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा पदाधिकारियों ने स्वागत किया। समारोह में विनय प्रकाश आर्य, अंजु आर्या, नत्थुसिंह आर्य, सुभद्रा देवी, राजनाथ गोयल, बाला गोयल, अभय आर्य, तूलिका आर्या, सुभाष दुआ, संतोष दुआ, आर्येन्द्र आर्य, अमिता आर्या, रमेश कुमार अग्रवाल, माधुरी अग्रवाल, मनोहरलाल आर्य, चन्द्रकान्ता खुराना, हेतराम सागर, कृष्णचन्द्र गोयल, अंकित आर्य, दिनेश रस्तौगी, संगीता विश्वदेव रस्तौगी, मधु, सत्यप्रकाश खुराना, सुप्रिया खुराना, ऊषा आर्या, नरेन्द्र कान्त गर्ग, यशवंत सिंह, विनय त्यागी आदि यजमान रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता नत्थूसिंह प्रधान ने की तथा संचालन हेतराम सागर, डॉ. अशोक कुमार आर्य ने किया। अभय आर्य मंत्री ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रसन्नता है कि आचार्य दार्शनेय लोकेश शास्त्रार्थ को तैयार हैं

महोदय!

आर्यावर्त केसरी वर्ष-17, अंक-10 (सितम्बर- 2018) के पृष्ठ सं0-2 पर प्रकाशित समाचार से विदित हुआ कि आचार्य लोकेश जी दार्शनेय शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गये हैं। बहुत विलम्ब से ही सही, किंतु तैयार तो हुए। यह बहुत प्रसन्नता की बात है। उन्होंने कुछ शर्तें रखी हैं। अस्तु, प्रक्रिया को आगे चलाया जाए। मेरे अनुमान से उनकी शर्तों को मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए और मुझको भी नहीं है। नियमानुसार दस रुपये के स्टाम्प पेपर पर जैसे मैंने अपना अभिमत तथा सहमति लिखकर दिनांक 11/04/2017 को विधिवत् आपको भेजा था, वैसे ही आचार्य लोकेश जी दार्शनेय से उनका अभिमत तथा सहमति दस रुपये के स्टाम्प पेपर पर लिखवाकर आप ले लेवें, ताकि समय पर वह पत्रक कार्यकारी सिद्ध हो सके। धन्यवाद!

-विदुषां वशंवदः
आचार्य भद्रकाम वर्णी
वर्तमान पता- आर्य समाज मन्दिर, ३ए/८, डी०डी०यू० मार्ग,
मिण्टो रोड नई दिल्ली- ११०००२
चलभाष- ८७०००९८४१२, ९११०९२२०१०

धर्म जागृति महोत्सव ३० नव० से

डॉ० अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़ (बिजनौर)।

आर्य समाज मन्दिर में रविवार को यज्ञोपरान्त डॉ0 अशोक रस्तोगी के संचालन व चौ0 चरणसिंह आर्य की अध्यक्षता में आयोजित सभा में धर्म जागृति महोत्सव 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक मनाने का निर्णय लिया गया।

महोत्सव में वैदिक धर्म उपदेष्टाओं के रूप में वेद प्रवक्ता आचार्य संजय याज्ञिक (मेरठ), भजनोपदेशक पं0 योगेश दत्त आर्य (बिजनौर), वेद विदुषी डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती (गुरुकुल नजीबाबाद), व पं0 विक्रम देव आर्य आदि का मार्गदर्शन अनुगृहणीय है।

सभा में सुरेश पाल आर्य, अवधेश आर्य, सुशील रस्तोगी, पूरण सिंह ध्यानी, रिशव विश्नोई आदि की उपस्थित विशेष रूप से रही।

आगामी कार्यक्रम

- 6 से 9 दिसम्बर- वार्षिकोत्सव, आर्य समाज दयानन्द नगर, गाजियाबाद।
- 5 से 9 दिसम्बर- वार्षिकोत्सव, गुरुकुल, नोएडा।
- 17 जनवरी से 7 जुलाई- वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ, गुरुकुल मंझावली।
- 2 से 3 जनवरी- वेदपारायण यज्ञ, ग्राम मण्डावली, बिजनौर।
- 13 से 20 फरवरी- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ग्राम सुआहेड़ी (बिजनौर)।
- 1 से 8 मार्च- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ग्राम मुलसम, जि0- बागपत।
- 9 से 10 फरवरी- स्वस्ति यज्ञ, कोटा।
- 7 से 9 दिसम्बर- यजुर्वेद पारायण यज्ञ, सगरपुर, गाजियाबाद।
- 13 से 16 दिसम्बर- ऋग्वेद यज्ञ, खेड़ी मनिहारान, मवाना (मेरठ)।
- 21 से 23 दिसम्बर- सामवेद पारायण यज्ञ, पल्लवपुरम् (मेरठ)
- 24 से 25 दिसम्बर- सामवेद पारायण यज्ञ, कचहरी रोड, मेरठ।

अन्तर्मन का दीप जलाओ : डॉ० अशोक

डॉ० अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़ (बिजनौर)।

आर्य समाज मन्दिर में प्रकाश पर्व व ऋषि निर्वाण दिवस श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आयाजित यज्ञ के ब्रह्मा डॉ0 अशोक रस्तोगी ने उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सब लोग दीप जलाकर व विद्युत सज्जा करके अपने घर का अंधकार तो मिटा लेते हैं, परन्तु अपने अन्तर्मन में व्याप्त तिमिर को दूर करने की चेष्टा नहीं करते। क्योंकि जिसके अन्त:करण में प्रकाश फैलाने वाला दीप प्रज्वलित नहीं होगा, उसमें अनेक विकार आ जाते हैं। अंतर्मन के अंधकार के कारण हम परस्पर समानता का भाव नहीं ला पाते, जिससे अनेक द्वेष व पाखण्ड परिलक्षित होने लगते हैं। वास्तविक प्रकाश तो तभी दिखता है, जब आपसी सामंजस्य, सौहार्द, ज्ञान व दया के दीप जलाये जाते हैं। अतएव हम सभी को मिलकर ऐसी ज्योति प्रज्वलित करनी चाहिए, जिससे जीवन व सृष्टि का कोना-कोना प्रकाशित हो उठे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 अशोक रस्तोगी ने कहा कि ऋषिवर दयानन्द ने ज्ञान के प्रचण्ड सूर्य वेदों को वर्तमान युग में पुन: प्रचारित- प्रसारित कर, 'संसार के लोगो वेदों की ओर लौटो' का महान संदेश देकर 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की अभिव्यंजना को सार्थक किया था। युगप्रवर्तक महान समाजसुधारक ऋषिवर ने इस धरती पर छाये अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड, सतीप्रथा, अस्पर्श्यता, बाल विवाह, विधवा विवाह उद्धार आदि के सघन तिमिर को दूर भगा 30 अक्टूबर 1883 को दीपावली के प्रकाशपर्व पर अपने जीवन को चिर शांति प्रदान कर निर्वाण प्राप्त किया था।

दीपपर्व यज्ञ के आयोजन में विशेष रूप से चौ0 चरणसिंह आर्य, सुरेशपाल आर्य, अरुण विश्नोई, सुशील रस्तोगी, रिशव विश्नोई, अवधेश आर्य, पूरण सिंह ध्यानी आदि की सहभागिता रही।

वैदिक कर्मकाण्ड, प्रवचन, आयुर्वेद सम्बन्धी परिचर्चाओं के लिए सम्पर्क करें

सुमन कुमार वैदिक
(वैदिक प्रवक्ता)
निवास- जे.-380, बीटा-II,
ग्रोटर नोएडा (उ.प्र.)
मोबा. : 8368508395,
9456274350

आर्य समाज, आर्य श्रीमाली सोनी परिवार, प्रगति मण्डल, राजकोट (गुजरात)

सदस्य बनें

गुजरात राज्य तथा गुजरात के बाहर तमाम गुजराती श्रीमाली व सोनी परिवार सदस्य बनने के लिए सादर आमंत्रित हैं। कृपया आगे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार या संपर्क करें। सदस्यता नि:शुल्क है।

पता : आर्य भाईलाल शिवलाल सोनी, म0नं0- 101, केशव एपार्टमेंट नं0-1, ठाकुरद्वार पार्क नं0-1, नया मोरबी रोड, मधुबन स्कूल के पास, पो0- बेडीपुरा, राजकोट (गुजरात)- 360003
मोबा0 : 09712370185

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

भारत में अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की स्थिति

यह शब्द बहुत खतरनाक और हानिकारक है। अल्पसंख्यक प्राय: हर देश में होते हैं। उन्हें अधिकार कम देने की परम्परा है। 1947 में भारत के 24 प्रतिशत मुस्लिमों ने कांग्रेस को बंटवारा स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया। यदि हिन्दू महासभा ने खंडित भारत का संविधान बनाया होता तो उसमें अल्पसंख्यक, धर्मनिरपेक्षता, मुस्लिम लीग जैसे शब्दों के प्रयोग पर पाबंदी लगा दी होती।

ब्रिटिश सरकार ने 51 प्रतिशत सम्प्रदाय को बहुसंख्यक और 49 प्रतिशत तक के समुदाय को अल्पसंख्य माना था। यही बंटवारे का आधार रखा गया। खण्डित होने वाले भारत की संविधान सभा में 289 सदस्य थे। अधिकांश नेहरू समर्थक थे। डॉ0 अम्बेडकर को कार्य सौंपा गया। नेहरू समर्थकों ने अपने बहुमत से कई ऐसी व्यवस्थाएं करा लीं, जो डॉ0 अम्बेडकर को पसंद नहीं थीं। सरदार पटेल की अध्यक्षता में अल्पसंख्यक निर्धारण समिति गठित की गयी, जिसे यह सिफारिश करनी थी कि खंडित भारत में किन-किन समुदायों को किस आधार पर अल्पसंख्यक माना जाए? कई बैठकें हुईं, किंतु किसी भी सिफारिश पर सहमति नहीं हुई। मुस्लिम प्रतिनिधि तजामुल हुसैन ने कहा था कि प्रस्तावित धर्मनिरपेक्ष भारत में अल्पसंख्यक शब्द स्वीकार्य नहीं हो सकता, क्योंकि यह राष्ट्रीयता के लिए घातक है। उनका कहना उचित व सराहनीय था, क्योंकि उनकी सोच राष्ट्रवादी थी। हम उनकी प्रशंसा करते हैं। अन्त में पटेल समिति ने कह दिया कि समिति किसी मान्य सिफारिश पर नहीं पहुंची है। अत: अनुच्छेद 366 में अल्पसंख्यक शब्द की कोई परिभाषा, अर्थ या व्याख्या नहीं लिखी जाए। मुस्लिम समर्थक नेहरू ने बाद में अल्पसंख्यक कमिश्नर का पद रखवा दिया, जिसकी रिपोर्ट वर्ष में संसद में प्रस्तुत की जाती थी। बाद में कांग्रेस ने अनौपचारिक रूप से मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, पारसी को चुपचाप अल्पसंख्यक मान लिया। तथाकथित हिन्दू हृदयसम्राट बाजपेयी ने कमिश्नर का पद समाप्त करके अल्पसंख्यक आयोग बनवा दिया, जो अभी तक चल रहा है। यह आयोग छह राज्यों के हिन्दू अल्पसंख्यकों के लिए कुछ नहीं कर सकता है। अत: अटल बिहारी वाजपेयी को प्रथम अल्पसंख्यक रत्न मरणोपरांत देना चाहिए।

विश्व में अल्पसंख्यक तुष्टिकरण सबसे ज्यादा भारत में ही है। हर गांधीवादी, समाजवादी, साम्यवादी, सबका साथ - सबका विकास का नारा लगाने वाली गांधीवादी/ दीनदयाल उपाध्याय की भाजपा इस समय तुष्टिकरण में सबसे आगे चल रही है। कांग्रेस ने 90 अल्पसंख्यक बहुल जिले बनाये थे। भाजपा ने उनकी संख्या 308 कर दी है। कांग्रेस में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ है, जबकि भाजपा में अल्पसंख्यक मोर्चा है। भाजपा में राष्ट्रीय मुस्लिम मंच है, जबकि कांग्रेस में नहीं है।

मानवाधिकार आयोग बन जाने पर भी भाजपा ने अल्पसंख्यक आयोग जारी रखने का निश्चय कर रखा है। हिन्दुओं का प्रतिशत 88 से घटकर 80 रह गया है। किसी भी दल ने कोई भी चिन्ता प्रकट नहीं की है। भाजपा ने कुख्यात एएमयू को स्वायत्तता दे दी है। भाजपा वहां से जिन्ना का फोटो नहीं उतरवा सकी है। यदि इसी प्रकार हिन्दुओं का प्रतिशत घटता रहा और हिन्दी समाज तमाशा देखता रहा, तो देश का प्रधानमंत्री मुस्लिम और राष्ट्रपति ईसाई बन सकता है। अत: हिन्दू सावरकरवादी बनें।

अतिथि सम्पादकीय- इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक-हिन्दू महासभा, बुलन्दशहर, मोबा० : ८९५८७७८४४३

वेदों में विश्वबन्धुत्व की भावना

खुशहाल चन्द्र आर्य

इस लेख के संबन्ध में कुछ लिखूं, इससे पहले यह बतलाना आवश्यक है कि ईश्वर ने पूरी सृष्टि रचने के बाद यानी पशु-पक्षी, कीट-पतंग, पहाड़, समुद्र, नदी-नाले, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश आदि सब रचने के पश्चात् मानव की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर पृथ्वी के अन्दर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर अनेक युवा स्त्री-पुरुषों की उत्पत्ति की। साथ ही चार ऋषि, जिनकी आत्मा अति श्रेष्ठ व पवित्र थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, व अंगिरा थे। उनके हृदय में चार वेद, जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, व अथर्ववेद हैं, का प्रकाश करके उनके मुख से उच्चारित करवाये। जिनको उपस्थित सभी युवा स्त्री-पुरुषों ने उस वेदज्ञान को सुना। उन पुरुषों में ऋषि ब्रह्मा भी थे, जिनकी बुद्धि अति तीव्र थी। उसने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाया। इसके बाद यह वेदज्ञान पिता अपने पुत्रों को, गुरु अपने शिष्यों को सुनाते रहे। और इस प्रकार यह वेदज्ञान लाखों, करोड़ों वर्षों तक चलता रहा। इसीलिए इस वेदज्ञान को श्रुति भी कहते हैं। यानी सुनकर दूसरों को सुनाना। तत्पश्चात् लाखों, करोड़ों वर्षों बाद जब कागज, स्याही, कलम आदि अविष्कार हो गया, तब इनको चार पुस्तकों में लिपिबद्ध कर दिया गया, जिनको वेद कहते हैं।

वेद का तात्पर्य ज्ञान है। यह ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आदि में एक विधान के रूप में मनुष्य मात्र को दिया। जिस प्रकार सरकारी विधान से राष्ट्र चलता है, उसी प्रकार यह ज्ञान मनुष्यों के लिए विधान है। इनमें ईश्वर ने क्या काम मनुष्य को करना चाहिए, क्या काम नहीं करना चाहिए, लिखा है। किन कार्यों के करने से मनुष्य अपने जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति व समृद्धि को प्राप्त करता है और अपने जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाते हुए अन्यों का जीवन भी सुखी व सम्पन्न बनाता है। जो व्यक्ति वेदानुसार अपने जीवन को चलाता है, वह मनुष्यों के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को भली प्रकार करते हुए मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त होता है। जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए ही ईश्वर जीव को धरती पर भेजता है।

वेदों में ईश्वर ने मनुष्य के जीवन में काम आने वाले सभी विषय के संबन्ध में लिखा है, जिनमें विश्वबन्धुत्व की भावना पर विशेष जोर दिया गया है, जिससे विश्व में सुख-शांति बनी रहे। वेदों में अनेक विश्वबन्धुत्व के मंत्रों में कुछ मंत्र यहां प्रस्तुत करते हैं, जो इस प्रकार हैं-

मंत्र- अज्येष्ठा सो अकनिष्ठा स ऐते सं भ्रातरो वा वृधु: सौभागाय। (ऋग्वेद)

अर्थ- हम सब भाई-भाई हैं। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। सौभाग्य के लिए हम सब परस्पर मिलकर उन्नति करें।

मंत्र- माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या: (अथर्ववेद)

अर्थ- भूमि हमारी माता है और हम सब उसकी सन्तान हैं।

मंत्र- वसुधैव कुटुम्बकम्।

अर्थ- पूरा विश्व एक परिवार है।

मंत्र- सर्व भूतेसु चात्माने ततो न विचिकिनपति।

अर्थ- हे मनुष्य! तू सब प्राणियों में अपनी आत्मा को देख और सबकी आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझ।

मंत्र- अनुव्रत: पितु: पुत्र: (अथर्ववेद)

अर्थ- पुत्र, पिताप के व्रत (आदर्श) का अनुसरण करने वाला होवे।

मंत्र- कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अर्थ- पूरे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

मंत्र- जीवास्थ जीव्यासम (अथर्ववेद)

अर्थ- स्वयं जीओ और दूसरों को जीने दो।

मंत्र- सत्येनोत्तमिता भूमि: (यजुर्वेद)

अर्थ- यह भूमि सत्य पर टिकी है।

मंत्र- आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्चति स: पण्डित:।

अर्थ- जो सब प्राणियों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान समझता है, वही पण्डित (विद्वान) है।

मंत्र- तेन त्यक्तेन भुजियां मा मृघ: किस्य स्विद्धनम् (यजुर्वेद)

अर्थ- इस संसार का त्याग भाव से भोग करो। इसमें लिप्त न हो, लालच न करो, यह संसार किसी का नहीं, ईश्वर का है।

(नोट- इस मंत्र का मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है)

मंत्र- अहम् नृतात सत्यमुपैसि (यजुर्वेद)

अर्थ- मैं असत्य से सत्य की ओर चलूं।

मंत्र- यत्र विश्व भवत्येक नीडम्। (यजुर्वेद)

अर्थ- जिससे सारा विश्व एक आश्रय वाला होता है।

मंत्र- मित्रस्य माचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षान्ताम् (यजुर्वेद)

अर्थ- सब प्राणियों को हम मित्र की दृष्टि से देखें।

मंत्र- अकर्मा दस्यु रभि नो अजन्तुर न्य व्रतो अमानुष:। त्वं तस्या मित्र हन्व धर्दा सस्य दम्भय:।। (ऋग्वेद)

अर्थ- जो कर्म नहीं करता, वह दस्यु है। उसे कोई सुख न होवे। तुम शत्रुओं के समान उसका वध कर दो अथवा दास के समान उस पर अनुशासन करो।

वचन- आत्मन: प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत् (वेदों के विद्वान भीष्म पितामह का वचन भी वेदों के समान है)

अर्थ- जो काम आपको अच्छा नहीं लगता, वह काम दूसरों के लिए भी न करो।

मंत्र- यज्ञौ वै श्रेष्ठतम् कर्म:।

अर्थ- यज्ञ करना सबसे श्रेष्ठ काम है।

मंत्र- स्वर्ग कामो यजेत (याज्ञवल्क्य, शतपथ ब्राह्मण में लिखा है)

अर्थ- जिसकी स्वर्ग जाने की कामना है, वह यज्ञ करे।

मंत्र- सत्यमेव जयते, नानृताम्।

अर्थ- सत्य की सदैव जीत होती है, झूठ की नहीं।

कुछ वेदमंत्र व वेदमंत्रों के समान ही मंत्र, अर्थ सहित लिखे हैं, कृपया सुधी पाठक गण विचार व मनन करें।

प्रेरक प्रसंग : गायत्री मंत्र को सार्थक किया

गायत्री मंत्र से प्रभवित होकर फैजाबाद के जिलाधिकारी डॉ0 अनिल कुमार जी ने एक लावारिस वृद्धा को मुखाग्नि दी।

फैजाबाद के जिलाधिकारी अपने नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकारी वाहन से कहीं जा रहे थे कि अचानक उनको सड़क किनारेएक वृद्धा पड़ी हुई दिखाई दी। अपने वाहन को रोककर अपने सुरक्षा गार्ड के साथ उस वृद्धा को अपनी गाड़ी में लाकर अस्पताल में दाखिल कराया और उचित चिकित्सा की व्यवस्था कराई। चिकित्सकों की राय से लखनऊ से कुछ परिचित चिकित्सकों को भी फैजाबाद बुलाया। परन्तु वृद्धा की स्थिति बिगड़ती चली गयी। जिलाधिकारी ने अपना नैतिक मानवता का परिचय देते हुए उस लावारिस वृद्धा का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया और मुखाग्नि भी स्वयं दी। जिलाधिकारी के अनुसार इस वृद्धा से 'मेरी मां' जैसा आत्मीय संबन्ध हो गया है। शत-शत नमन।

-कृष्णकुमार गोयल, ११३, कोट, अमरोहा, फोन- ९९२७०६४१०४

गोपाष्टमी व गोवर्धन पर्व का महत्व

दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। इससे सिद्ध होताहै कि हम लोग गाय के वंश की वृद्धि हेतु उसका पालन-पोषण करें, तभी उसके गोबर-मूत्र से खाद बनकर पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति बढ़ेगी और रोगरहित खाद्य पदार्थ प्राप्त होंगे। आर्गेनिक खेती भी बढ़ेगी। गोपाष्टमी पर्व से भी तात्पर्य है कि श्रीकृष्ण ने गोवंश की रक्षा हेतु गोवर्धन आन्दोलन चलाया था। इसलिए गाय को राष्ट्रीय पालतू पशु घोषित कराएं, तभी गोवंश रक्षा होगी। गोशालाओं हेतु शासन द्वारा अनुदान मिलता है। प्रत्येक जिले में गोचर भूमि भी उपलब्ध है, किंतु गायों का पालन न होने से गोचर की भूमि पर कब्जे कर लिये गये हैं। इसलिए कब्जे हटाने हेतु 1076 नम्बर पर शिकायत दर्ज कराकर गोचर भूमि की सुरक्षा करते हुए गायों का पालन कर ऊर्जा की बचत करें।

-श्रद्धानन्द योगाचार्य, बजरिया कायमगंज फर्रुखाबाद (उ०प्र०)

विलक्षण व्यक्तित्व के धनी अर्जुनदेव चड्ढा

डॉ. बीना रुस्तगी

परमात्मा की अनुकम्पा और कर्मफल के आलोक में प्रत्येक प्राणी संसार के रंगमंच पर आता है और अपने किरदार को निभाकर संसार में अपनी पहचान बनाता है। विधाता के इस अनुमप संसार में कुछ प्राणी ऐसे भी होते हैं, जो लोकोपकार, धर्मोद्धार हेतु जीवन धारण करते हैं। ऐसा ही एक अनुपम व्यक्तित्व लगभग 6 फीट ऊंचाई, बलिष्ठ देह, गेंहुआ रंग, उन्नत ललाट, चेहरे पर गम्भीरता, सौम्यता व उदात्तता का मिलाजुला भाव, एक परिचय में ही जन्मों-जन्मों का परिचय बना लेने वाला हँसता मुस्कुराता चेहरा, जो कभी देश और समाज के हालातों की व्यथा से भर जाता है, तो कभी समाज के असहाय, उपेक्षित, निराश्रित जनों के बीच स्वयं की उपस्थिति से बालसुलभ उन्मुक्त हास से भर जाता हो, अत्यंत उदार, निश्छल, धुन के धनी, कर्मठ, अनुशासनप्रिय सम्पूर्ण विश्व में अपने आर्यत्व से जाने वाले सर्वप्रिय सहृदय समाजसेवी हैं तो वह अर्जुनदेव चड्ढा ही हो सकते हैं। जिन्हें देखकर काम करने की ललक का जागना स्वाभाविक ही हो जाता है। नि:स्वार्थ समाजसेवा, निराश्रितों का आश्रय, परमार्थी, परोपकारी इत्यादि गुण यदि किसी एक व्यक्ति में देखें, तो यह व्यक्तित्व चड्ढा जी का ही हो सकता है।

कोटा आर्यसमाज का नाम आते ही एक नाम बरबस स्मृति में आ जाता है। लगभग 15 वर्षों से नियमित आर्यावर्त केसरी में कोटा की विभिन्न गतिविधियां प्रकाशित होती रहीं, जिसके साथ आर्यसमाज कोटा की जीवन्तता का अहसास होता रहा। दैव योग से 31 मार्च 2014 को कोटा पहुंचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आर्यत्व के प्रतीक या कहूँ या चलते-फिरते 'आर्यसमाज' अथवा 'व्यक्ति नहीं एक संस्था' जैसे अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी अर्जुन देव चड्ढा से मिलने का अवसर मिला। श्री चड्ढा से मिलकर लगा कि जितना आपके बारे में सुना था उससे कहीं ज्यादा आपको पाया। तन, मन, धन से समर्पित आर्यसमाजी जिनकी सुबह आर्यसमाज के मिशन से शुरू होती है तथा स्वप्न में भी आर्यसमाज के कार्य करते होंगे। किसी भी व्यक्ति के जीवन की सफलता की पूर्णता उसके परिवार से होती है। सम्मानीय चड्ढा जी का परिवार एक आदर्श आर्य परिवार है। उनके बेटे राकेश चड्ढा, मुकेश चड्ढा व बहू पूनम व गीता, पौत्री साक्षी, कीर्ति, मानसी, पौत्र अमन से मिलकर लगा सही मायने में सम्पूर्ण परिवार पिता के पदचिन्हों पर चलकर आर्यत्व का परचम लहरा रहा है। इस परिवार को देखकर लगता है कि श्री चड्ढा जी की धर्मपत्नी वास्तव में एक आर्यमाता रही होंगी। आज भी यह परिवार उन्हीं के सुकृतियों की छाया में पुष्पित पल्लवित हो रहा है।

आपका जन्म पाकिस्तान के तराप तहसील- तलादंग, जिला- कैमलपुर में 17 जुलाई 1944 को हुआ। आपकी माता का नाम राज कौशल्या तथा पिता रामलाल जी थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पाकिस्तान में व पाकिस्तान से आने के बाद हाथरस (उ.प्र.) में हुई। 8 अगस्त 1957 में सातवीं पास करने के बाद आप कोटा आए। कोटा में हायर सैकेन्ड्री पास की। आपके पिता सिंचाई विभाग में कार्य करते थे। आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए आप कक्षा- 8, 9, 10 में पढ़ते हुए ग्रीष्मावकाश में काम किया करते थे। प्रारम्भ से ही आत्मनिर्भर होने की कोशिश रही।

विभाजन का दंश झेलते परिवार को नन्हें हाथों ने मजबूती प्रदान करने की नन्हीं-नन्हीं कोशिशें की। इन्हीं झंझावातों ने एक फौलादी इंसान को गढ़ा। बचपन में अपने पिता श्री रामलाल जी से मिले आर्य संस्कारों में इस मातृभूमि के सपूत का पोषण-पल्ल्वन हुआ। परिणामत: आर्यसमाज की रीतियां, नीतियां इनकी रग-रग में रच-बस गयीं। सोते-जागते, उठते-बैठते केवल और केवल आर्य समाज, और आर्य समाज की धुन।

श्री अर्जुन देव चढ्डा कोटा के ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनके रोम-रोम में समाजसेवा की भावना भरी हुई है। हर पल विकलांगों, दीन-दु:खियों, असहायों, बेसहारों, पीड़ित कुष्ठ रोगियों, अनाथों, फुटपाथों पर सोनेवालों, कच्ची बस्तियों के लोगों, कैदियों, जरूरतमंद विद्यार्थियों, वृद्धों, उपेक्षित समुदायों, शहर-गांव के इलाकों में सेवार्थ दौड़ते रहते हैं। सबकी खोज-खबर लेते रहते हैं। जिनका घर सेवा सामग्री से भरा रहता है। आर्य समाज, पंजाबी समाज एवं अन्य संगठनों की कड़ी बनकर इस सेवाकार्य को सभी ऋतुओं में गति प्रदान करते हैं। वृक्षारोपण, पक्षियों की प्यास, एड्स जनचेतना, पोलियो की खुराक, आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाना जैसे विविध कार्यों से प्रभावित होकर आपको देश की जानी-मानी हस्तियों, संस्थाओं, नागरिकों, नेताओं, प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने विविध उपाधियों से अलंकृत एवं सम्मानित किया है। आपके निवास स्थान पर प्रमाण पत्रों, प्रशंसा पत्रों का अम्बार लगा हुआ है।

श्री चड्डा के लिए सेवा कोई शब्द, संदेश या उपदेश मात्र न होकर एक अनथक क्रियान्वयन है। आप स्वयं तो नेत्रदान की घोषणा कर ही चुके हैं लेकिन इससे पहले 1987 में अपने पिता, 1997 में अपनी पत्नी तथा कुछ समय पूर्व अपने बड़े भ्राता का मरणोपरान्त नेत्रदान

जिला आर्यसमाज कोटा के प्रधान व आर्य परिवार वैवाहिक सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा

कर सूनी आँखों को रोशनी प्रदान कर चुके हैं। श्री चड्ढा ने स्वयं 44 बार तथा दोनों पुत्रों ने क्रमश: 22 और 38 बार रक्तदान किया है। भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय किये गये कार्यों ने श्री चड्ढा को मानवता का सच्चा हमदर्द सिद्ध किया है।

आपके जीवन पर नज़र डालते हैं, तो एक स्वाभिमानी पिता की स्वाभिमानी सन्तान विभाजन के बाद पिता ने शरणार्थी क्लेम नहीं भरा। भले ही आर्थिक संकटों का सामना किया।

रावतभाटा (कोटा) में 'क्वालिटी कंट्रोल' विभाग में दैनिक भोगी के रूप में आजीविका की शुरुआत करने वाले चड्ढा जी डी0सी0एम0 मिल में कार्य करने के साथ-साथ ट्रेड यूनियन के नेता बने। यही नहीं, अपनी नेतृत्वशक्ति का लोहा मनवाकर 'श्रीराम कैमिकल श्रमिक संघ' के अध्यक्ष का पद भी संभाला। डी.सी. एम. के इतिहास में ऐसे तीन ही मजदूर नेता हुए हैं जिन्हें मैनेजमेन्ट ने रिटायरमेन्ट के बाद भी सलाहकार के रूप में रखा। श्री ठाकुर चन्द्रिका सिंह (मेरठ), श्री ब्रजगोपाल सैन (कोटा), अर्जुन देव (कोटा)।

माँ की घुट्टी में मिले आर्य संस्कारों से अनुप्राणित अर्जुनदेव जी आर्य समाज के छठे मंत्र के उपासक हैं।

मानवता के उपासक श्री चड्ढा जी के विचार कि "आज माँ की कोख में भी सुरक्षित नहीं- कन्या भ्रूण। सब लोग मौन होकर मूकदर्शक बने बैठे हैं। ज्यादा हुआ तो आपस में खुसफुसाहट कर चुप हो जाते हैं। समझियें! समझाइयें!! और रोकिए कन्या भ्रूण हत्या। आप तो बुद्धिजीवी हैं। भविष्य के सामाजिक झंझावात के आगाज के दुष्परिणामों को अच्छी तरह जानते हैं। सोचिए! क्या घटता कन्या लिंगानुपात भारतीय संस्कारित पारिवारिक परम्परागत ढांचे के ताने-बाने को तोड़-मरोड़ कर बिखेर नहीं देगा? क्या फिर से धृतराष्ट्र की तरह अपने पुत्र दुर्योधन की काली करतूतों को अनदेखा करना दूसरे सामाजिक महाभारत के लिए मार्ग प्रशस्त नहीं करेगा? क्या कन्या भ्रूण हत्या मानव वंश वृद्धि को रसातल की ओर ले जाते हुए समाज और देश का अहित नहीं करेगी?" धन्य हैं ऋषि की राह के राही आपकी सामाजिक चेतना को प्रणाम करते हैं।

औद्योगिक एवं शैक्षणिक नगरी कोटा में शायद ही कोई ऐसा गली-कूंचा होगा, जहां आपके कदम न पड़े हों। आपके घर से लेकर गाड़ी में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की सामग्री भरी रहती है। शहर के किसी भी कोने में आप बच्चों को गायत्री मंत्र याद कराते हुए यज्ञ कराते हुए या पक्षियों के परिण्डे बांधते-बंधवाते हुए दिखाई देते हैं। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन की एक-एक सांस महर्षि दयानन्द को समर्पित कर दी है। तभी तो 76 वर्ष की उम्र में भी कई बार शारीरिक आघातों को झेलते हुए कैंसर जैसी भयावह बीमारी को चकमा देकर आर्य समाज की सेवा का दीप जलाए हुए हैं। मानो परमात्मा भी आपके इस सारस्वत कर्म के लिए निरंतर इस महामानव की जीवटता को बनाए हुए है। आर्य समाज का यह सिपाही और ऋषि का दीवाना, मानव मात्र की पीड़ा को हरने वाला शिवत्व व्यक्तित्व जीवेम शरद: शतम् की यात्रा कर अनन्त कीर्तिमान बनाकर आर्यत्व की ध्वजा का परचम लहराता रहेगा- ऐसा हमारा विश्वास है।

पुन: हार्दिक शुभाकांक्षाओं के साथ अपके दीर्घ एवं यशस्वी जीवन की कामना करते हैं।

त्याग तपस्या की प्रतिमा तुम,
सत्य ज्ञान के सागर।
मानवता भी धन्य हो गयी,
तुम सा मानव पाकर।।

-साहित्य सम्पादक-
आर्यावर्त केसरी,
एसो0 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष-
हिन्दी विभाग
जे0एस0एच0 पी0जी0 कालेज,
अमरोहा

यह भी जानें

विद्या ही सफलता का मूल आधार है

जिस प्रकार नेत्रहीन के लिए सारा संसार अंधकारपूर्ण रहता है, उसी प्रकार ज्ञानान्ध के लिए भी संसार का मधुर रहस्य ज्ञान-विज्ञान के चमत्कार, साहित्य और कला का आनन्द युग-युग से संग्रहीत ज्ञान का रसास्वादन आदि सारे सुख निरर्थक ही रहते हैं। वह इन सारी संपदाओं के बीच रहते हुए भी उदरपालन की प्रक्रिया में ही बहुमूल्य जीवन को नष्ट कर देता है।

संसार से लेकर आत्मा तक जितने सुख माने गये हैं, विद्या के अभाव में व्यक्ति उनसे सर्वथा वंचित ही रहता है।

यदि आपको जीवन में सुख सम्मान पाना है और आत्मा को उन्नत बनाकर परमात्मा तक पहुंचने की जिज्ञासा है, तो आज से ही विद्या रूपी धन संचय करने में लग जाइए।

-वैदिक धर्म के प्रचार में समर्पित- यतीन्द्र विद्यालंकार

मसालों में सर्वश्रेष्ठ 'हींग'

कृष्णमोहन गोयल

हींग रसोईघर की पहचान है। प्रत्येक गृहणी हींग का प्रयोग अवश्य करती है। यह संक्रामक रोगों को विराम देता है। साथ ही-

(1) हींग उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक है। हींग में कोडयारिन तत्व खून को पतला करने में सहायक है। बढ़े हुए कालेस्ट्रोल को कम करता है।

(2) लो ब्लड प्रेशर में हींग के पाउडर में थोड़ा सा नमक मिला कर पानी के साथ पीने से फायदा होता है।

(3) नियमित हींग के सेवन से ज्यादा इंसुलिन बनती है। ब्लड शुगर को नियंत्रित करती है।

(4) उदर में गैस समस्या होने पर हींग को पानी में घोलकर नाभि पर लेप करें, लाभ होगा।

(5) उदर रोगों में हींग को पानी में घोलकर पीने से लाभ होता है।

(6) भोजन बनाते समय एक चुटकी हींग भोजन को स्वादिष्ट बना देती है।

(7) खटमलों से छुटकारा पाने के लिए एक चुटकी हींग को गर्म पानी में घोलकर खटमलों के ऊपर छिड़काव करने से लाभ होता है।

-११३, बाजार कोट, अमरोहा

मानव का चौथा शत्रु है आलस्य

'सरस्वती सुमन' के सम्पादक व 'क्रान्ति' जैसी अनेक पुस्तकों के लेखक, तथा छतारी के नवाब डॉ० कुंवर अखलाक के पुत्र वैदिक विद्वान डॉ० आनन्द सुमन सिंह ने मानव के चार प्रमुख शत्रु- अज्ञान, अन्याय, अभाव, तथा आलस्य बताये हैं। विगत तीन अंकों में क्रमशः अज्ञान, अन्याय व अभाव के विषय में लेखक के विचार प्रकाशित हुए हैं। इस अंक में मानव के चतुर्थ प्रमुख शत्रु 'आलस्य' के विषय में प्रस्तुत है यह आलेख।

-सम्पादक

डॉ० आनन्द सुमन सिंह

चौथा शत्रु आलस्य-जिसे मैंने विकट शत्रु सम्बोधित किया वह आलस्य है। आलस्य एक विकट व महान शत्रु है, क्योंकि समाज में यदि आलस्य रहेगा तब कोई भी कार्य करना कठिन है। आलस्य को त्याग कर ही हम अज्ञान को समाप्त करने में सक्षम है। आलस्य के त्याग से ही हम अज्ञान को समाप्त करने में समर्थ हैं। आलस्य के त्याग से ही हम अभाव को समाप्त कर सकते हैं। आलस्य वह महान शत्रु है, जिसके कारण समाज का प्रत्येक वर्ग ही नहीं प्राणी मात्र बेकार हैं आलस्य ने प्राणी को नकारा कर दिया है। आपने खरगोश और कछुए की कहानी सुनी होगी, आलस्य के कारण ही हमें अनेकों प्रकार के संकटों का सामना करना पड़ता है। यदि हम आलस्य को समाप्त कर लें तो अज्ञान अभाव को समाप्त करने में हमें कोई कठिनाई नहीं होगी। मुगल काल की एक घटना स्मरण हो आई। मुगल सम्राट मोहम्मद शाह रंगीले अपने महलों में अय्याशी में मस्त रहता था। उसे शासन व्यवस्था या जनता के सुख-दुख से कोई मतलब न था। वह मात्र वासनापूर्ति भोग विलास में लीन रहता था। एक बार किसी दुश्मन से उसके राज्य पर हमला किया तब सेनापति ने आकर सूचना दी- आलीजाह दुश्मन सीमा पर आ गया है। आज्ञा दें कि हम लड़ें रंगीले का उत्तर था-कोई बात नहीं अभी शहर बहुत दूर है। दूसरी बार सूचना दी गई दुश्मन शहर में आ चुका है, उत्तर था अभी हमारा महल बहुत दूर है। तीसरी बा सूचना थी, दुश्मन महल में आ चुका है। उत्तर था कोई बात नहीं हमारा हरम बहुत दूर है। चौथी बार सूचना थी कि दुश्मन हरम के दरवाजे पर आ चुका है। उत्तर था बड़ा बेशर्म है मुआ हमें आराम नहीं करने देता और उसे कैद कर लिया गया। यह है आलस्य का परिणाम। आलस्य को त्यागना सर्वोत्तम कर्म है, आलस्य को एक नीतिकार ने भयंकर शत्रु कहा है।

आलस्य मनुष्याणाम शरीरस्थों महान रिपुः।

भाव-जीवन का भयंकरतम शत्रु शरीर में विद्यमान है जिसे आलस्य दीर्घ सूत्रता या प्रमाद कहते हैं तब क्या हम सब नीतिकारों से शिक्षा लेकी आलस्य को त्यागने का परम कार्य करेंगे। जो आलस्य में रहता है वह काफी सफल नहीं होता, विजय उसी की होती है जो चुस्त व फुर्तीला हो, फिर जीवन खाली बैठने के लिए नहीं मिला है। देखें वेदोपदेश-

कर्व वेह कर्माणि जिंजि विषेश्छतम् समाः॥ ४०-२२

भाव-हे जीवात्मन इसी संसार में कर्म करते हुये जीने की इच्छा करो। मुक्ति धाम का स्थान भी यही है, सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।

कर्म करने व आलस्य का पवित्र उपदेश वेद एवं अन्य आर्ष ग्रन्थों में है। आलस्य रूपी शत्रु से हमें संघर्ष करना है, पुरुष का कर्त्तव्य है कर्म करना। महर्षि व्यास के शब्दों में-

एतसवनेव पुरुषः यस्मिरण न नश्यति॥

भाव-वही तो पुरुष है जिसमें कर्म का विनाश नहीं होता, अतः आलस्य त्यागिये, कर्मठ बनिये स्वयं उन्नति पथ पर ले आइये। वैदिक वर्ण व्यवस्था में आलस्य से संघर्ष का महान कार्य शूद्र को सौंपा गया है। शूद्र शब्द का अर्थ सर्वोच्च है, अर्थात सेवक है। व्यवहारिक रूप में शूद्र शब्द का अर्थ गति प्रदान करने वाला है। शूद्र की वर्ण व्यवस्था में शाब्दिक अर्थानुसार सर्वोच्च स्थान दिया गया है। शूद्र समाज के लिये सर्वोपयोगी है, इसलिये शूद्र महान है। जहाँ शूद्र को उचित मान सम्मान न दिया जाता हो वह समाज कभी सुखी नहीं होता। जहाँ किसी भी वर्ण या वर्ग के साथ भेद-भाव बरता जाये वह समाज कभी शान्तिमय नहीं रहता। अतः हमारे मानव समाज को चाहिये कि अस्पृश्यता को समाप्त कर जीवन में सभी को समानाधिकार देना सीखें। आलस्य रूपी शत्रु को समाप्त करने के लिये हमारे शुद्र वर्ग को आगे आना चाहिये। विश्व शान्ति के लिये जहाँ आज, अन्याय व अभाव को समाप्त करने की आवश्यकता है, उससे भी कहीं अधिक आलस्य को समाप्त करने की है। वही समाज आदर और सम्मान का भागीदारी बनना है, जो आलस्य को छोड़कर कार्यशील हो, अर्थात् कार्य करता रहे! सदा उसी मुख्य का सर्वत्र सम्मान होता है, जो कर्मठ हो हमारे देश मे प्रातः सोकर उठते समय करतल दर्शन का भी यही उद्देश्य है कि हमारे हाथ निरन्तर कर्म-शील रहकर न्याय पूर्ण ढंग से जीविकोपार्जन में लगे। आलस्य त्यागकर कर्म करने से लक्ष्मी (धन) सरस्वती (विद्या) तथा गोविन्द का निवास (प्रभु शक्ति) आदि बातों का सौभाग्य प्राप्त होता है। अतः विश्व के मानव समाज को आलस्य त्यागकर कर्मक्षेत्र में रहना चाहिये। भेद-भाव, ऊँच-नीच को समाप्त कर मानव, मानव एक होकर समाज को गति प्रदान करें व समाज से अज्ञान, अन्याय, अभाव का नाश करें। गतिशील समाज के द्वारा ही वैदिक साम्राज्य की सार्वभौम चक्रवर्ती कल्पना को हम पूर्ण करने में सफल हो सकते हैं।

वैदिक वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर है, जन्म के आधार पर नहीं। ब्राह्मण के कुल में जन्मा मानव अपने कर्मानुसार क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र कुछ भी बन सकता है। यही विधि अन्य वर्णों के लिये भी है। परमपिता परमेश्वर हमें सभी से समानाधिकार एवं उचित व्यवहार व प्रेम करने की आज्ञा देता है।

प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये॥ अ० १९-६१-१

भाव-सबका कल्याण सोचों चाहे शूद्र हो या ब्राह्मण, क्षत्रिय हो या वैश्य। सभी तो परमपिता की सन्तान हैं, सबका स्वतन्त्र कर्म करने का अधिकार है। किन्तु फल तो परमेश्वर ही देगा। वास्तव में कर्माधिकार ही मानव को श्रेष्ठ बनाता है, तब हम सबका परम कर्तव्य है कि स्वयं भी श्रेष्ठ कार्य करें। अन्य मानवों को भी श्रेष्ठ कर्म करने की शिक्षा दें। आज का मानव कर्माधिकार से बहुत दूर जा चुका है। आइये हम सब भेदभाव को त्याग कर विश्व के प्रत्येक मानव तक परमेश्वर के कल्याणकारी उपदेशों को पहुँचाये। प्राणी मात्र के कल्याण हेतु विश्व के लिये वरदान वैदिक संस्कृति को पुनः विश्व के प्रत्येक मानव तक पहुँचा दें। वेदोपदेश के अनुसार-परमेश्वर सभी को मानव बनने की शिक्षा देता है, और मानव बनकर सभी को मानव बनाने की शिक्षा दी। हम सब परमेश्वर के पुत्र हैं फिर प्रथक क्यों रहें। तब आयें प्रथम-प्रथम दिशा को त्याग कर एक मार्ग पर चलें जो वेद का पवित्र व सत्य सनातन मार्ग है-

सभ्यंचः सब्रता भूत्वा वाचं वदय भद्रया॥ अ० ३-३०-३

भाव-समान गति, समान कर्म, समान ज्ञान और समान नियम वाले बनकर परस्पर कल्याणी वाणी से बोलो।

हम सबके प्रत्येक अधिकार समान हैं। तब आयें संगठित होकर विश्व के अज्ञान, अन्याय, अभाव व आलस्य रूपी शत्रुओं का नाश कर विश्व के प्रत्येक मानव को श्रेष्ठ कार्य करते हुए मानवीय जीवन जीने का उपदेश दें। प्राणी मात्र के जीवन की रक्षा करते हुये हम कल्याण पथ की ओर बढ़े। पुनः वेदोपदेश का स्मरण कर लें-

अनागास्त्व आभज जीव शंसे॥ ऋ० १-१०४-६

भाव-परमात्मा हमें सब जीवों से प्रशंसनीय और निष्पाप जीवन में संयुक्त करें। हमारे जीवन को परोपकारी बना दें। ऋग्वेद के पवित्र सन्देशों द्वारा हम ज्ञान प्राप्त कर अज्ञान का नाश करने में समर्थ हैं। ऋग्वेद की पवित्र वाणी हमें ब्राह्मण बनाती हैं, यजुर्वेद के पवित्र उपदेशों द्वारा हम जीवन में न्याय की ज्योति जला लें। यजुर्वेद की वाणी हमे क्षत्रिय बनाती है। अथर्व वेद की पवित्र वाणी द्वारा विज्ञान, तकनीक ग्रहण कर जीवन को कुशल व्यवसायी बनाकर उचित धनार्जन करें-अथर्ववेद की पवित्र वाणी हमें वैश्य बनाती हैं। सामवेद के पवित्र आदेशों का पालन कर हम समाज में समता व गति लाकर परमपिता की निष्पक्ष भाव से भक्ति करें-सामवेद की वाणी हमें सर्वोच्च अर्थात शुद्र बनाती है। चारों वेदों से हमने चार वर्ण पाये व चार महान शत्रुओं को नाश करने की युक्ति का चिन्तन किया। अन्त में यही प्रार्थनाकरता हूँ कि परमात्मा, सकल जगत के मानवों को पुनः वेद के पवित्र मार्ग पर वापस लाकर सकल विश्व में पुनः सार्वभौम चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य की स्थापना कर प्रत्येक प्राणी के जीवन में वैदिक ज्योति प्रज्जवलित कर दो। हे जीवत्मन! तुम कर्म करने में स्वतंत्र हो तब ऐसा कर्म करो कि तुन्हें सदा-सदा श्रेष्ठम मानव योनि ही प्राप्त हो और उत्तम वेदोक्त कर्मो को करते हुये सफल जीवन व्यतीत करो यही प्रभु से प्रार्थना है।

कृपया प्रतिक्रिया भेजें

सम्मानित पाठकों से अनुरोध है कि आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित समाचारों व आलेखों के विषय में समय-समय पर अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहें। धन्यवाद,

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-२४४२२१, उ.प्र.

किस 'भरत' के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा

भगवानदास आर्य

आज विद्यालयों में देश का नाम दुष्यंत व शकुन्तला-पुत्र भरत, जो बचपन में शेर-शावकों के साथ खेला करता था, उसके नाम से प्रचलित करते हैं। जो पूर्ण असत्य है। सत्यता यह है कि पृथ्वी के प्रथम सम्राट स्वायंभुव मनु हुए। उनके पुत्र प्रियव्रत हुए। प्रियव्रत के पुत्र आग्तिध हुए। आग्तिध के पुत्र नाभि हुए। नाभि के पुत्र ऋषभदेव हुए। ये वही ऋषभदेव हैं, जिन्हें जैन लोग अपना प्रथम तीर्थंकर अर्थात् आदिनाथ मानते हैं। इनके नौ पुत्र हुए, जिनमें एक का नाम भरत था। ऋषभदेव ने इस भू-मण्डल को नौ दीपों में विभक्त किया। प्रत्येक पुत्र को एक-एक दीप का सम्राट बनाया। इन्हीं महाराज भरत ने इस देश का नाम भारतवर्ष रखा। तब से लेकर आज तक शुभ कार्य में पंडित लोग संकल्प कराने में 'आर्यावर्तान्तर गते भरतखण्डे भारतवर्ष' बोलते हैं। इनको पैदा हुए 1 अरब 95 करोड़ अट्ठावन लाख पिचासी हजार के लगभग हो चुके, जबकि दुष्यंतपुत्र भरत को 10 हजार वर्ष भी नहीं हुए। इसी से स्पष्ट सिद्ध है यह बात आप पाठकगण पुराणों में देख सकते हैं एवं संस्कृत के आचार्यों से पूछ सकते हैं। प्रथम सम्राट भरत के विषय में किंवदन्ती है कि सम्राट भरत वृद्धावस्था आने पर राज्य का भार पुत्र को सौंपकर बन में तपस्या हेतु चले गये। उनका लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना था। वो अनवरत साधना में लगे रहते थे। एक दिन प्रातः संध्या में मग्न थे। क्या देखते हैं कि नदी किनारे एक हिरणी जल पीने को आई। उसे जल पीते में एक बहेलिए ने बाण से मारा। हिरणी गर्भवती थी। उसके पेट से नवजात शिशु हुआ, जिसे भरत ने पाल-पोष कर अपने आश्रम में रखा। समय आने पर भरत मृत्युशैया पर थे। उन्हें इस शावक से ममता थी। जो सम्राट राज्य, प्रजाजन, व परिवार को छोड़कर सभी से मोह त्यागकर आत्मकल्याणहेतु वन में आये, उनकी आसक्ति शावक में हो गयी। उस आसक्ति के प्रभाव से मृत्युपर्यन्त उन्हें हिरण की योनि ही प्राप्त हुई। उस योनि में ज्ञान था कि मैं पूर्वजन्म में सम्राट भरत था। यहां 'अन्तगति सो गति' सिद्ध होती है। हिरण की योनि में के केवल सूखी घास खाकर व जल पीकर रहते थे। हिंसा की वजह से ये हरे पत्ते नहीं खाते थे। हिरण की योनि छोड़ने के बाद पुनः मनुष्य योनि में भरत नाम ही मिला। इन्हें लोग जड़ भरत के नाम से जानते हैं। ऐसा पुराणों में लेख है। जड़ भरत आयु पूर्ण होने पर मोक्ष को प्राप्त हुए।

बेलौन, बुलन्दशहर (उ०प्र०)

सुधासागर प्रवाह

बहन सुधा वर्मा ने 'सुधा-सागर-प्रवाह'- वैदिक यज्ञ पद्धति, त्योहार व भजन संग्रह का संकलन किया है। यह एक स्तुत्य कार्य है, जो यज्ञप्रेमी सज्जनों के लिए बहुत उपयोगी होगा।

वैदिक यज्ञ पद्धति के उपरांत बहिन सुधा ने इस संग्रह में भक्तिभाव के भजनों का समावेश किया है। अधिकतर लोग संस्कृत का ज्ञान न रखने के कारण वैदिक मंत्रों की प्रार्थनाओं को, उपदेशों को, भली भाँति नहीं समझ पाते। इसलिए भजनोपदेशक भजनों के माध्यम से वेदों के उपदेशों को, ईश्वर-स्तुति, प्रार्थना-उपासना संबन्धी विषयों को, सामान्य जन तक पहुंचाते हैं।

हमारी संस्कृति को बचाए रखने में पर्वों व संस्कारों का बहुत महत्व है। बहिन सुधा ने इन त्योहारों एवं संस्कारों को वैदिक पद्धति के अनुसार करने के लिए, वैदिक मंत्रों एवं उपयुक्त भजनों का चयन करके इस पुस्तक में रखा है। इसके लिए वे श्लाघा की पात्र हैं।

बहिन सुधा केवल भजनों के गायन एवं श्रवण में रुचि ही नहीं रखतीं, वे एक कवयित्री भी हैं। विदेशों में रहकर उन्होंने कई सामयिक विषयों पर कविताएं लिखीं, जिनका समावेश उन्होंने संग्रह के मध्य भाग में किया है। पोखरन परमाणु परीक्षण, आतंकवाद, आज के युग में भारत, आदि कविताएं दर्शाती हैं कि वे भक्तिरस से स्निग्ध होती हुई भी देश-विदेश की राजनीति की भी सुध रखती हैं, जो कि एक राजनयिक की पत्नी होने के नाते उनसे अपेक्षित है।

पुस्तक का नाम : सुधासागर प्रवाह
लेखिका : श्रीमती सुधा वर्मा
कुल पृष्ठ सं० : 372
मूल्य : 150/- रुपये
प्रकाशक : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, चलभाष - 8800841851

मैं और मेरे उत्प्रेरक

राष्ट्र भाषा हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार, तथा बहुआयामी प्रतिभा के धनी, कवि श्री शिवअवतार सरस की उतार चढ़ाव भरी एवं संघर्षमयी यात्रा को समाहित किये उनके ही शिष्य श्री वत्स द्वारा सम्पादित पुस्तक 'मैं और मेरे उत्प्रेरक' एक पुस्तक नहीं, अपितु संकलन ग्रंथ हैं, जिसमें उनकी जीवन यात्रा के साथ-साथ उपलब्धियां, संस्मरण, प्रकाशित व अप्रकाशित रचना संसार, सम्मान, अभिनन्दन, साहित्यिक उल्लेख, प्रकाशित पाठ्य पुस्तकें, सम्पादन सन्दर्भ आदि वह सभी कुछ संजोया गया है। एक श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में श्री सरस की कीर्ति पताका चहुँओर लहरा रही है।

''मैं और मेरे उत्प्रेरक'' को पाँच भागों में विभाजित किया गया है।

वस्तुत: 'मैं और मेरे उत्प्रेरक' एक ऐसी संदर्भ ग्रंथ है, जिसमें साहित्यकार श्री 'सरस' जी की 'शून्य से शिखर' तक की जीवन यात्रा समाहित है- इसमें उनकी साहित्यिक यात्रा भी है और सामाजिक यात्रा भी। यह ग्रन्थ निश्चय ही एक पठनीय, संग्रहणीय एवं श्लाघनीय ग्रंथ है।

पुस्तक- मैं और मेरे उत्प्रेरक
सम्पादक- ब्रजेन्द्र सिंह वत्स
प्रकाशक व पता- पुनीत प्रकाशन, मालती नगर, मुरादाबाद (उ.प्र.)
चलभाष- 09456032671
पृष्ठ- 528, **मूल्य-** 500/-
समीक्षक- डॉ. अशोक रस्तोगी अफजलगढ़ (बिजनौर) उ.प्र.

योग को समर्पित ब्रह्मनिष्ठ व्यक्तित्व स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

डॉ0 सुरेन्द्र सिंह कादियाण के संपादन में प्रकाशित यह ग्रन्थ योग साधक यज्ञ योग वेद महर्षि दयानन्द आर्य समाज की विचारधारा के निष्ठावान संवाहक, कवि, लेखक, शोधार्थी, संपादक, प्रचारक डॉ0 स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के अमृत महोत्सव पर उनके अभिनन्दन ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हुआ है, जिसमें महत्वपूर्ण आलेखों सहित स्वामी जी के व्यक्तित्व और कृतित्वों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक पठनीय व संग्रहणीय है।

पृष्ठ : 532
मूल्य : 500/- रुपये
प्रकाशक/ पता-
डॉ0 स्वामी दिव्यानन्द अभिनन्दन समारोह समिति, पतंजलि योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार

कविवर वीरेन्द्र राजपूत कृत अथर्ववेद काव्यार्थ

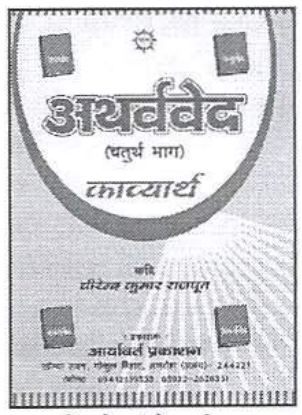

कविवर वीरेन्द्र कुमार राजपूत, निवासी देहरादून एक ऐसे कवि हैं, जिन्होंने चारों वेदों के हिन्दी काव्यार्थ का संकल्प लिया है। इस कड़ी में सामवेद काव्यार्थ, यजुर्वेद काव्यार्थ तथा अथर्ववेद काव्यार्थ के प्रकाशन हो चुके हैं। अथर्ववेद का काव्यार्थ' कवि द्वारा चार भागों में प्रकाशित कराया गया है। आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा अथर्ववेद काव्यार्थ के दो भाग क्रमश: तीन और चार प्रकाशित किये गये हैं। वर्तमान में कवि श्री राजपूत जी द्वारा ऋग्वेद के काव्यार्थ का कार्य चल रहा है। उन्होंने बड़े ही सरल, सुबोध व सरस शब्दों में कवित्तों व छन्दों के माध्यम से वेदमंत्रों की काव्यमय व्याख्या की है। वास्तव में उन्होंने आर्यसमाज के नियम-3 'वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है' के भावों से प्रभावित होकर वेदों के काव्यार्थ का संकल्प लिया है, जो सराहनीय है। सभी काव्यार्थ पठनीय, संग्रहणीय, तथा भावपूर्ण हैं। प्रत्येक घर तथा आर्य संस्थाओं में ये रखे जाने चाहिए।

पुस्तक का नाम : अथर्ववेद काव्यार्थ
कवि : श्री वीरेन्द्र राजपूत, फोन-9412635693
कुल पृष्ठ सं० (चारों भाग) : 1500
चारों भागों का आमंत्रण मूल्य : मात्र 500/- रुपये
प्रकाशक तथा वितरक : आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा, फोन-9412139333

वेद में क्या और कहाँ

वेद में क्या और कहाँ पुस्तक आचार्य वेदपाल वर्मा शास्त्री द्वारा लिखित है। इसके द्वारा जनसामान्य भी वेद विद्या को सरलता से समझ सकता है। इस पुस्तक में वेद के प्रति आकर्षण और रुचि भी पैदा हो जाती है। इस पुस्तक में चारों वेदों को एक सूत्र में पिरोकर उसका एक हिन्दी का इण्डैक्स तैयार किया गया है।

पुस्तक का नाम : वेद में क्या और कहाँ
लेखक : वेदपाल वर्मा शास्त्री
प्रकाशक : मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ।
मूल्य : 150/- रुपये
पृष्ठ संख्या : 182
लेखक का पता : मालदा बाग, पुरानी गुड़ मण्डी, शाहपुर, जि0- मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)- 251318,
चलभाष : 09927575777
-समीक्षक : सुमित अग्रवाल

हृदय एवं फेफड़ों को सबल बनाता है नौकासन

विधि :- 1. दोनों हाथों को जंघाओं के ऊपर रखकर सीधें लेटें। अब श्वास अन्दर भरते हुए पहले सिर एवं कन्धों को ऊपर उठाएं फिर पैरों को भी ऊपर उठायें। हाथ, पैर एवं सिर समानान्तर नाव की तरह उठे हुए हों। 2. इस स्थिति में कुछ समय रूककर धीरे-धीरे हाथ पैर एवं सिर को भूमि पर ले जांए। इस प्रकार से 3 से 6 वार तक आवृत्ति कर सकते हैं।

लाभ :- 1. इसके भी लाभ उत्तानपादासन के समान है।
2. हृदय एवं फेफड़े भी प्राण वायु के प्रवेश से सबल बनते हैं।
3. आंत्र, आमाशय, अग्न्याशय एवं यकृत आदि के लिये उत्तम है।

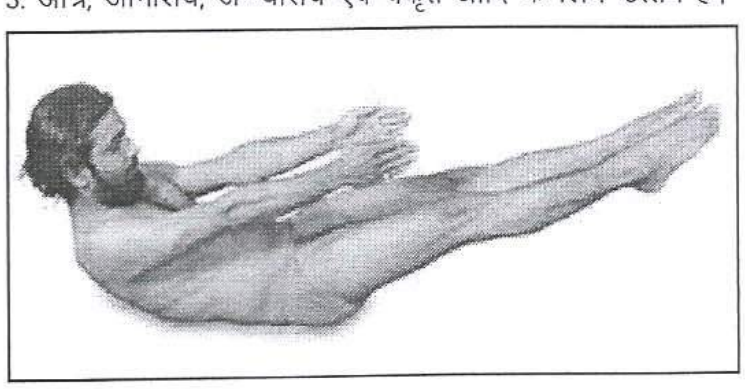

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जाएगी। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

साहित्य समीक्षा : नियमित स्तम्भ

आर्यावर्त केसरी के इस नियमित स्तम्भ में आर्य जगत के विद्वान लेखकों तथा रचनाकारों की बहुमूल्य कृतियों की समीक्षाएं प्रकाशित की जाती हैं ताकि उनके विषय में जिज्ञासु पाठकों, मननशील शोधार्थियों, मनीषियों तथा विभिन्न धार्मिक सामाजिक, सांस्कृति व शैक्षणिक संस्थाओं को उपयोगी जानकारी मिल सके। इस दृष्टि से इस स्तम्भ में विद्वान, रचनाकारों तथा प्रकाशकों की कृतियों का स्वागत है। एतदर्थ उनसे अनुरोध है कि किसी भी पुस्तक की समीक्षा हेतु उसकी न्यूनतम दो प्रतियां अग्रांकित पते पर भेजने का कष्ट करें। धन्यवाद,

डॉ. बीना रुस्तगी, साहित्य सम्पादक, आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221

आओ ज्योतिष सीखें

क्या आप नित्य साधना, यज्ञ आदि के समय संकल्प पाठ करते हैं

आचार्य दार्शनेय लोकेश

ऋग्वेद भाष्यभूमिका में महर्षि दयानन्द लिखते हैं-

ज्योतिषशास्त्रे प्रतिदिनचर्याअभिहितार्ये: क्षणमारभ्य कल्पकल्पान्तस्य गणितविद्यया स्पष्टं परिगणितं कृत्मद्यपर्यन्तमपि क्रियते प्रतिदिनमुच्चार्यते ज्ञायते चात: कारणादित्यं व्यवस्थैव सर्वेर्मनुष्यै: स्वीकर्तु योग्यास्ति नान्येति निश्चय:। कृतो ह्यायं नित्यम ''ओं तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वतीयप्रहरार्द्धे..... मासपक्षदिननक्षत्र लग्न मुहुर्ते अत्रेदं कृतं क्रियते च' इत्याबालवृद्धै: प्रत्यहं.....।''

स्वामी जी का पूर्ववर्ती, तात्कालिक और पश्चातवर्ती आर्यों पर पंचांगीय अनुपालना का कितना बड़ा विश्वास था, देखिये तो सही। स्वामी जी कह रहे हैं कि ''आज का दिन कौन सा है।'' यह जानने की आर्यों की ज्योतिषशास्त्र सम्मत एक नित्य चर्या है। उसको 'संकल्प' कहते हैं। मैं आपसे पूछता हूं कि क्या आप करते हैं संकल्प की यह नित्यचर्या? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? यदि हां, तो फिर कैसे? स्वामी जी तो यह भी कह रहे हैं- ''अत्रेदं कृतं क्रियते च इत्याबालवृद्धै: प्रत्यहं..... ...।'' अब यदि नित्य का यह संकल्प आप करते हैं तो निश्चित है कि अवैदिक पंचांगों के अनुसार ही करते होंगे और नहीं करते हैं, तो तब भी आप स्वामी जी की अपेक्षा के अन्तर्गत (प्रतिदिनचर्या अभिहितार्यो अर्थात् आर्यानुकूल) आचरण नहीं करते हैं। मैं पूरी विनम्रता से पूछना चाहता हूं कि आप गलत कार्य क्यों करते हैं? इस बात को यहीं छोड़ते हैं। मुख्य बात यह है कि आज से ही सही, आपने अब सत्य 'आर्य आचरण' की इस चर्या को स्वीकार करना है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर है ज्योतिष सम्मत कालगणना और उस पर आधारित नित्य का संकल्पपाठ। अपनी गौरवमयी संस्कृति के शुभ प्रवाह में अपना योगदान बनाये रखने हेतु संकल्प पाठ को समझने और स्मरण करने का शुभ संकल्प लें। इसके साथ संकल्प पाठ का उच्चारण का अभ्यास भी होना चाहिए। संध्या यज्ञ आदि के नित्यकर्म में संकल्प पाठ करने से सहज ही इसका अभ्यास हो जाता है।

कुछ याज्ञिक और नित्य संध्या करने वाले महानुभाव भी यह कह देते हैं कि संकल्प पाठ आदि केवल ब्राह्मणों का विषय है। पता नहीं, समाज में यह अज्ञान कहां से उग गया है। सत्य यह है कि धर्म और संस्कृति से जुड़े रहना एवं उसके विकास और शुद्ध प्रवाह में अपना योगदान बनाए रखना प्रत्येक आर्य/हिन्दू का नैतिक दायित्व है।

संकल्प पाठ आप शुद्ध वैदिक पंचांग के अनुसार करेंगे, तो सत्य धर्म के भागीदार बनेंगे। वर्तमान में प्रचलित पंचांग पौराणिक आधार पर त्रुटिपूर्ण अवैदिक होने से भ्रमात्मक है। अनुसरणीय नहीं है। इनके आधार पर किया संकल्प पाठ गलत अवैदिक अर्थात् सत्य से हटकर होगा। वैदिक सिद्धांत के अनुसार अर्थात् वेदों की ऋतुबद्धता के मार्गदर्शन के अनुसार बनाया गया श्री मोहनकृति आर्ष पत्रकम ही अनुकरणीय पंचांग है। जो आचार्य दार्शनेय लोकेश, सी-27, गामा प्रथम, ग्रेटर नोएडा, जि0 गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित है, जिनका दूरभाष नं0 120-4271410 है। कुछ लोगों की शंका है कि संध्या से पहले संकल्प पाठ की क्यों आवश्यकता है? इसका उत्तर है कि धार्मिक कृत्य से जुड़ी प्रत्येक चर्या के प्रारम्भ में संकल्प पाठ आवश्यक है। यदि हम कोई प्रतिज्ञा करते हैं, तो उस प्रतिज्ञा को भी जल या चावल हाथ में लेकर संकल्पपाठ करना चाहिए।

वह कौन है?

घनघोर तिमिर का वक्ष चीर-भू पर उतरी थी एक किरन।
संदेश सवेरे का लाई- हम करते उसका अभिनन्दन।।
जड़ता के पूजन अर्चन ने- जब चिन्तन का अपमान किया।
तूने तब मानव के मन में- चेतनता का आह्वान किया।।
जंजीरों से जकड़े स्वदेश को- राह दिखाई थी तूने।
जिसको न काल भी बुझा सका- वो शमा जलायी थी तूने।।
घनघोर तिमिर के आंगन में- तू बीज ऊषा के बोता था।
आवाज़ लगायी थी तूने- जब सारा भारत सोता था।।
कर दिया स्वराज का शंख ध्वनित- तूने देश की वाणी में।
तप त्याग तेज के अंगारे- पाले अनमोल जवानी में।।
तूने अनाथ की आह सुनी- विधवाओं का क्रन्दन देखा।
तूने दोपहरी के नयनों में- लहराता सावन देखा।।
तू अगर न बनता प्रबल वेग- निष्ठा स्वराज की आंधी का।
कभी न पूरा हो सकता सपना- भारत में गांधी का।।
तू महादेश का निर्माता- भारत का भाग्य विधाता है।
इस धरती का कवि कोई श्रद्धा के पुष्प चढ़ाता है।।

-हरिश्चन्द्र आर्य (अधिष्ठाता उपदेश विभाग) अमरोहा

गांधी/शास्त्री जयन्ती पर मांस-मद्य बन्द करें

शासन द्वारा गांधी व शास्त्री जयन्ती पर मद्य व मांस की दुकानें बन्द रखने का प्रावधान किया गया है, जसका अनुपालन अधिकारीगण सुनिश्चित करायें।। गांधी जी सत्य व अहिंसा के उपासक थे, किंतु शासन ने हिंसा, असत्य को बढ़ाया है।, क्योंकि शराबबन्दी गांधी जी का लक्ष्य था। संविधान के अनुच्छेद 47 में शराबबन्दी लागू करने का राज्यों को अधिकार है, एवं शराब पीना नागरिकों का कोई मूलाधिकार नहीं है। अत: संविधान के अनुच्छेद 47 का अनुपालन करते हुए डाक्टर के पर्चे पर शराब-बिक्री करें और जन-साधारण को विनाश से बचाया जाए। गांधी जी ने बिना खड्ग-ढाल के आजादी दिला दी, किंतु उनके गीत गाने वाले निजी शासन-प्रशासन की सुरक्षा देकर जनता को परेशान करते हैं, क्योंकि उन्हें गांधी जी के आचरण से मतलब नहीं है। तभी दूसरे ही दिन से हिंसा व असत्य शुरु हो जाता है। शास्त्री जी ने जय जवान-जय किसान द्वारा युवाओं को अपनी शक्ति का सदुपयोग कराकर उपलब्धि लेना बताया।

श्रद्धानन्द योगाचार्य, बजरिया कायमगंज, फर्रुखाबाद (उ०प्र०)

नव लेखकों के प्रेरक डॉ० भवानीलाल भारतीय

कोई भी धर्म, समाज अथवा संस्था अगर अपने कार्य एवं पहचान को इतिहास के पृष्ठों पर अंकित कर रखती है, तो उसके अस्तित्व को कोई मिटा नहीं सकता। मौखिक एवं संवाद रूप में किया गया कार्य समय को प्रभावित तो कर सकता है, लेकिन इतिहास उसे अपने पृष्ठों में उतना स्थान नहीं देता, जितना उसे देना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था- ''मेरे व्याख्यानों को लोग सुनते हैं, पर बाद में भूल जाते हैं। मैं इससे निराश हूं।'' यह भूल महर्षि दयानन्द ने नहीं की। उन्होंने सिर्फ व्याख्यानों, शास्त्रार्थों अथवा संवाद को ही प्रचार का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि अपने मन्तव्यों एवं सिद्धांतों को काल के पृष्ठों पर अंकित कर उसे शाश्वत बना दिया। यदि स्वामी जी ने कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' और 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' आदि 32 ग्रन्थों का निर्माण नहीं किया होता, तो आज सम्पूर्ण विश्व उनके विचारों से अनभिज्ञ रह जाता। इतिहास काल और विचारों का अनुगामी होता है, और समाज उसका अनुकरण करता है। स्वामी दयानन्द और उनके परवर्ती विद्वानों ने आर्य समाज के साहित्य निर्माण में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

डॉ0 भवानीलाल भारतीय जी भी आर्य लेखकों की उस अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं, जिनमें पं0 लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, पं0 गुरुदत्त, पं0 चमूपति, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द, पं0 गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी अभेदानन्द आदि दिग्गज लेखक हैं।

आपसे पूर्व आर्य लेखकों की साहित्य निर्माण शैली वर्णनात्मक, खण्डन मण्डनात्मक एवं प्रमाण दर्शक रही है। सर्वप्रथम आपने आर्य साहित्य में शोध एवं तुलनात्मक शैली का प्रारम्भ किया। 'स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द', 'स्वामी दयानन्द और राजा राममोहन राय', 'पाश्चात्यों की दृष्टि में दयानन्द', 'लेखक कोष', 'आर्य विद्वानों का परिचय संग्रह', 'आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन', 'महर्षि दयानन्द का खोजपूर्ण जीवन' और अन्य पचासों विषयों पर आपने साहित्य निर्मिती की है। आप एक प्रगल्भ एवं उच्च कोटि के अध्यवसायी थे। उनके जाने से आर्य जगत के साहित्य निर्माण की अकथनीय क्षति हुई है।

आपके जीवन में विद्वत्ता और विनम्रता का सुन्दर समन्वय था। किसी पर क्रोध करते या आवेश में आकर

आर्य विद्वान यशस्वी लेखक को हार्दिक श्रद्धांजलि

बात करते हुए उन्हें किसी ने नहीं देखा। उनका मिलनसार व्यक्तित्व सभी में आदर भाव उत्पन्न करने वाला था।

लेखन के क्षेत्र में आर्य समाजी ही नहीं, अपितु गैर आर्यसमाजी लेखक भी उनसे प्रेरणा लेते रहे हैं। आपके मार्गदर्शन में अनेक शोधार्थी आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धांतों के लेखन की ओर अग्रसर हुए हैं। मैं भले ही गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में शिक्षित हुआ हूं, लेकिन सन् 1996 से आपके साहित्य सृजन को देखकर इस कार्य में अधिक प्रवृत्त हुआ हूँ।

आप दो बार श्रावणी पर्व पर लातूर आये थे, तब आपको अपने घर मैंने आमंत्रित किया था। मुझे याद है मैंने श्री भारतीय जी को स्वामी जी के छत्तीस ग्रन्थों में से उनके सिद्धांतों को संग्रहित करने के कार्य को उन्हें दिखाया था। वे बड़े प्रभावित हुए और कहा कि यह कार्य अब तक किसी ने नहीं किया है। यह सुनकर मुझे और स्फूर्ति प्राप्त हुई। आज वह ग्रन्थ 'दयानन्द शिखर सिद्धांत' के नाम से पूर्णता की ओर है। उन्होंने एक बार कहा था कि स्वामी दयानन्द के बारे में महापुरुषों के विचार सभी ने लिखे हैं। आप (चन्द्रशेखर) मुस्लिम विद्वानों के स्वामी जी के प्रति क्या मत है, यह लिखो। मैंने वह भी कार्य पूर्ण किया है- 'मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी'। इस पुस्तक के लिए डॉ0 भारतीय जी ने दो-तीन मुस्लिम विद्वानों का परिचय मुझे भेजा, जो प्रकाशित है। आप 'शिवाजी द ग्रेट' यह डॉ0 बालकृष्ण शर्मा (शाहू महाराज, कोल्हापुर यूनि0 के संस्थापक सदस्य एवं सहयोगी) लिखित पुस्तक का अनुवाद करना चाहते थे, पर वह कार्य रह गया। जब भी मैं कोई जानकारी उनसे प्राप्त करना चाहता तो वे फोन पर अथवा पत्र से मुझे कर देते थे। मेरी मराठी में लिखित 'वेदामध्ये पर्यावरण विज्ञान' पुस्तक उनके ही कर-कमलों द्वारा विमोचित हुई है। 'स्वामी दयानन्द संक्षिप्त जीवन चरित्र' आणि सुविचार इसके अब तक पांच संस्करण निकल चुके हैं। इसके लिए भी आपका हमेशा दिशा निर्देश रहा है। जब एक इतना बड़ा विद्वान और लेखक मुझ जैसे सामान्य लेखक का मार्गदर्शन करता है, तो उसके मन में अन्यों के प्रति कितनी सद्भावना होगी, यह सहज गम्य है। ''इन्हीं उच्च गुणों को लक्ष्य कर अभी उनके निधन से 15 दिन पूर्व मैंने 'मैं दयानन्द बोल रहा हूं' पुस्तक उन्हें समर्पित की थी। ऐसे उच्च एवं एक सच्चे गवेषक को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे
अध्यक्ष- संस्कृति रक्षक मंच
सीताराम नगर, लातूर
मोबा० : ९९२२२५५५९७

चिन्तन : सोचो, करो और बढ़ो

डॉ० सूर्यकान्त 'सुमन'

जिन्दगी समझनी है तो पीछे देखो।
जीनी है जिन्दगी तो आगे की ओर देखो।।
जीवन में दो चीजों का कभी अन्त नहीं होता-
भगवान की कथा और मनुष्य की व्यथा
किसी के सुख का कारण बनो भागीदार नहीं।
और दुख में भागीदार बनो कारण नहीं।।

जीवन की सच्चाई को समझना और परखना मानसिक कल्पना की अभिक्रिया है। जीवन में सत्कर्मों का योग है। अच्छा सोचोगे अच्छा करेंगे, अच्छा बनेंगे। कर्म का भोग और भोग का कर्म जीवन का मूलाधार है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है- कर्म करो। जीवन की अंतिम सांस तक कर्म से विमुख मत होओ।

बालक जन्म लेता है। संसार में आंखें खोलकर देखता है। अपनों को पहचानता और अपनी पहचान बनाता है। लेकिन बनना और बनाना तो कर्म-दर्शन की कल्पना है। ''मात-पिता अनुग्रह पावहिं, बहुलीला कर जीवन संवारहिं'' संसार बहुलताओं का दर्पण है। जैसे दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता, ऐसे ही कर्म कभी धोखा नहीं देते। हाँ कर्म-दर्शन की सच्चाई ही जीवन का अभिनव रूप है।

इच्छाशक्ति बलवान होगी तो सभी मनोरथ सिद्ध होंगे। सच्चाई यह है कि इच्छा और कर्म का समन्वय ही जीवन का भव्यतम स्वरूप है। जीवन का लक्ष्य निधरिण करना मन की अवस्थितिजन्य अभिक्रियाएं हैं। मन की सोच ही आगे बढ़ाती है, नहीं तो कूपमण्डूकता बनी रहती है।

गरीब के आंसू पोंछकर देखो तो गरीब का मन हमेशा दुआ देगा। अढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।

सामाजिक क्रान्ति के चलते समाज के मानदण्ड बदले। भाई-भाई, माता-पिता, गुरु-शिष्य संबन्धों में खींचतान है। संस्कारप्रियता खोती जा रही है। कभी भी परिवार में कलह न हो, सुख-शांति भंग न हो और अपने जीवन के लक्ष्य को सजाने और संवारने में लगे रहे तो समाज का अभिनव स्वरूप सामने होगा।

सच्चे अर्थों में जीवन सुखों का पालना है और दुखों का झमेला है। लेकिन सुख को अकेले भोगे और दुख को बांटना चाहे, यह भी अन्तस की अनुभूति है।

अन्तर्मन की प्रसन्नता छलकती है। सुख के आंसू भी छलछला आते हैं। सुख दो, सुख मिलेगा।

आन्तरिक प्रसन्नता के सूत्र हैं- प्रेम, खुशी, शांति। इसके लिए आवश्यक है- धैर्य, दयालुता, अच्छाई, वफादारी, सज्जनता।

जीवन में हमेशा प्रसन्नता को अपनाएं। आत्मविश्वासपरक जीना अपने पैरों पर खड़े होना, आत्मविश्वास ही श्रम हो, सत्कर्मों का वैभव हो, जीवन सुन्दर से सुन्दरतम होता है और होता ही जाता है।

कर्म का भोग भोग का कर्म
जीवन धन अर्पण धर्म ही धर्म

इतना ही नहीं इस संसार सम्बंधों का यश वैभव धन ऐश्वर्य से कहीं अधिक वैभवशाली है।

कौन है अपना कौन पराया,
इस संसार से नाता क्या।
जिससे बोलो प्यार से बोलो,
इसमें अपना जाता क्या।।

हाँ, यदि जीवन लक्ष्य की ओर बढ़े तो मंजिल सत्कर्म के द्वारा मिलती जाती है। अच्छाई चले एक कोस तो बुराई डेढ़ कोस तक अपना प्रभाव नहीं छोड़ती। मन की चाहना है तो राह तो चाह के अनुसार बनती जाती है।

नियति और नीयत मात्रा का अन्तर अर्थ और भाव दोनों को बदल देता है। ऐसे ही जैसे प्रकृति स्वभाव की समरसता एक है। नियति और प्रकृति ईश्वर इच्छा का संकेत है तो नीयत अर्थात मन का स्वभाव दर्शन अदलता बदलता रहता है। नियति का नियंत्रण है, तो नीयत भी ठीक-ठीक रहेगी।

समाज संस्कारवान बने और घर-परिवार की समृद्धि सम्बन्धों का मूलाधार हो। जिस घर में माता-पिता का सम्मान होगा, वह घर निसंदेह प्रगतिपथ पर बढ़ेगा। माता-पिता और पूर्वजों का साया परिवार, समाज की श्रीवृद्धि का ही परिचायक है।

-अध्यक्ष,
अखिल भारतीय चरणसिंह सुमन विचार मंच,
सुमन-सदन, नगीना चौराहा
धामपुर (बिजनौर)
मोबा० : ९९२७२३३६०३

समलैंगिकता बनाम सामाजिक नैतिकता

इन्द्र सिंह, (एच०सी०एस०)
पूर्व नयायाधीश

दिनांक 07-09-2018 को समाचार पत्रों में समलैंगिकता के विषय में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय पढ़कर भारत की पूरी जनता स्तब्ध रह गयी और अधिकतर की जुबान पर हैरानी भरी यही चर्चा है कि भारतीय समाज में सहमति से अनैतिक कर्म करने को अपराध की श्रेणी से बाहर कैसे निकाल दिया गया। हमारा प्राचीन इतिहास साक्षी है कि जब से सृष्टि की रचना होकर मानवी जीवन की व्यवस्था बनी है, तब से लेकर वर्तमान तक इस भारत भूमि पर चोरी और जारी का सभी अन्य बुराइयों से अपेक्षाकृत सबसे बुरा माना जाता रहा है। यह हमारा इतिहास तथा सभी प्रकार के प्राचीन एवं अर्वाचीन धार्मिक तथा सामाजिक ग्रन्थ बताते चले आ रहे हैं कि व्यभिचार से बढ़कर गन्दा काम अन्य कोई नहीं हो सकता। इसलिए व्यभिचार को सर्वाधिक घृणात्मक दृष्टि से देखा जाता रहा है। समलैंगिकता की बात तो दूर, दूसरे की पत्नी, माता, बहन व बेटी की ओर आंख उठाकर कुदृष्टि से देखना भी बड़ा पाप समझा जाता है। इसी तरह दूसरे के पति आदि की ओर कुविचार मन में आना स्त्री के लिए भी महापाप कहा गया है। इसलिए आदिकाल से अब तक उक्त आचरण का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के लिए कड़े दण्ड की व्यवस्था रही है। बल्कि संतानोत्पत्ति न करना हो और व्यर्थ में पति-पत्नी सहमति से भी समागम करते हों, तो भी शास्त्रानुसार यह व्यभिचार की श्रेणी में आता है।

हमारे देश ने लगभग एक हजार वर्षों से भी अधिक समय तक विदेशियों की गुलामी भोगी है। परन्तु इसके बावजूद विदेशी शासकों ने भी हमारी सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक नैतिक मूल्यों का पूरा ख्याल रखा। अंग्रेजों ने भी इसलिए भारतीय दंड संहिता (आई0पी0सी0) की धारा 376 तथा 377 जैसी अनेक धाराओं का निर्माण किया, क्योंकि वे भलीभांति जान गये थे कि परस्त्रीगामी होना, परपुरुषगामी होना तथा समलैंगिकता आदि सभी प्रकार के व्यभिचार इस देश की संस्कृति एवं सामाजिक नैतिक मूल्यों के विरुद्ध होने के कारण अपराध हैं। बल्कि यहां तक है कि अश्लीलता भरी भावना से अन्य व्यक्ति को छूना या स्पर्श करना भी अपराध माना जाता है। स्पर्श करने की बात तो अलग, अश्लीलतापूर्ण संकेत दूर से करना भी अपराध है। पूरे संसार के बड़े-बड़े विद्वान इस बात पर एकमत हैं कि 'वेद' संसार की लाइब्रेरी की पहली पुस्तक है। और वैदिक धर्म से पहले पूरी पृथ्वी पर कोई अन्य मत-मतांतर नहीं था। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण इसके नियमों का पालन करना हमारा मौलिक धर्म है। वर्तमान में जितने भी अन्य मत-पंथ इस पृथ्वी पर हैं, वे सब के सब 'वेद' रूपी वृक्ष की विभिन्न प्रकार की शाखाएं हैं। इसी कारण सभी मत-पंथों का कोई भी धार्मिक ग्रन्थ समलैंगिकता को उचित नहीं ठहराता, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से अप्राकृतिक होने के कारण अनैतिक है। बल्कि अमेरिका और यूरोप को छोड़कर लगभग 72 देश तथाकथित समलैंगिकता के घोर विरोधी हैं। वहां पर यह जघन्य अपराध होने के कारण, इसके लिए कठोर दण्ड का विधान है।

उपरोक्त निर्णय के आने के पश्चात् अभी से शिथिल मानसिकता वाले व्यक्तियों पर इसका कुप्रभाव पड़ने लगा है। समाचार-पत्रों में एक छोटी सी खबर आयी है कि एक मां व उसके परिवारजनों को उनके बच्चे ने खुले तौर पर कहा कि अब हमारा आप क्या कर लोगे, क्योंकि सहमति से समलैंगिकता अब कोई अपराध नहीं रहा है। इस निर्णय के भयंकर दुष्परिणाम तो भविष्य में आयेंगे, जैसे संक्रामक रोगों की उत्पत्ति अर्थात् छूत की बीमारियों का सहजता से आदान-प्रदान होने से असाध्य रोग उत्पन्न होंगे तथा नये-नये प्रकार के विवाद सुनने को मिलेंगे। भौतिक दुष्परिणाम ही नहीं, अध्यात्मिक रूप से भी भारतीय जनमानस के लिए समलैंगिकता निश्चित रूप से अनैतिक कर्म है। लोग मानसिक रूप से प्रताड़ित रहने लगेंगे। कोई भी कार्य करने के पश्चात् करने वाले की आत्मा बता देगी कि उसने जो कार्य किया है, वह ठीक किया है या गलत किया है। यह संभव ही प्रतीत नहीं होता कि समलैंगिकता का कार्य करने वालों की अन्तरात्मा उक्त कार्य करने के पश्चात् उसे उचित बताएगी। प्रायश्चित करने के अतिरिक्त उनके पल्ले कुछ नहीं होगा। वास्तव में चर्चाधीन निर्णय भारतीय समाज के लिए अप्रत्याशित है, क्योंकि वर्ष 2013 में इस विषय से संबन्धित प्रत्याशित निर्णय आ चुका था। उक्त स्थिति के दृष्टिगत उक्त निर्णय वेदानुकूल न होने के कारण, आर्यसमाज सहमति से समलैंगिक संबन्ध बनाने का पुरजोर विरोध करता है। अत: माननीय सर्वोच्च न्यायालय को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करके यथाशीघ्र पहले वाली स्थिति बनानी चाहिए, ताकि भारत की जनता की बेचैनी दूर हो सके और सामाजिक नैतिक मूल्यों का ह्रास रुक सके।

संरक्षक- आर्य समाज,
घंटाघर, भिवानी/
पता- २९- नई आनाजमंडी
भिवानी (हरियाणा)
मोबा० : ९४१६०५७८१३

गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम, उड़ीसा

सहयोग की अपील

गुरुकुल दयानन्द कल्याण आश्रम द्वारा ओडिसा के आदिवासी प्रभावित क्षेत्रों में स्वामी दयानन्द सरस्वती के कार्यों को अनेक गतिविधियों के द्वारा चलाया जा रहा है। वर्तमान में गुरुकुल द्वारा 25 छात्रों को नि:शुल्क आर्य पाठ विधि द्वारा शिक्षा दी जा रही है। गुरुकुल में गांवों की महिलाओं के विकास हेतु दयानन्द सिलाई शिक्षण केन्द्र, होम्योपैथिक चिकित्सा, यज्ञ-अनुष्ठान, योग-प्राणायाम-ध्यान, आदर्श गौशाला की व्यवस्था है। कृपया दानी महानुभाव इलाहाबाद बैंक के खाता सं. 20628274652 में राशि जमा कर, इस पुनीत कार्य में सहयोग करें।

आचार्य सुदर्शन- अधिष्ठाता, गुरुकुल कल्याण आश्रम
सा.-रायपुर, पो.-कुशीआपाल, (केन्द्रपाड़ा)-754250 ओडीशा, मोबा. : 09938175816

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को शत् शत् नमन

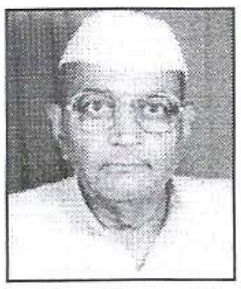

हरिश्चन्द्र आर्य

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी, विदेशों में रहकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष का संगठन करने वाले विश्वविख्यात रूसी लेखक मैक्सिम गोर्की द्वारा भारत के मैजेनी कहे जाने वाले बहुभाषाविज्ञ लन्दन में इंडिया हाउस की स्थापना करने वाले संस्कृत और अंग्रेजी के सुयोग्य वक्ता लेखक क्रान्तिकारी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा 4 अक्टूबर जिनका जन्मदिवस है।

गुजरात के कच्छ राज्य के माडवी कस्बे में श्री कृष्णजी मणसाली के परिवार में 4 अक्टूबर 1857 को जन्मे प्रारम्भिक शिक्षा कच्छ में तदुपरांत बम्बई में हुई। अत्यंत कुशाग्र बुद्धि, मेधावी, कक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करने वाले वैश्य समुदाय में उनकी प्रतिष्ठा व्याप्त होने लगी। स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त सेठ मथुरादास हावजी ने उन्हें संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी। मुम्बई के अत्यंत प्रतिष्ठित एलफिस्टन हाई स्कूल में अध्ययन करने के साथ संस्कृत भाषा और साहित्य के तलस्पर्शी अध्ययन में निमग्न हो गये। अपनी समुज्ज्वल प्रतिभा, विद्वता के कारण उनका परिचय मुम्बई के ही सेठ छबीलदास लल्लूभाई के अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार से हुआ और कालान्तर में इसी परिवार की कन्या भानुमति के साथ सन् 1875 में हो गया।

1875 में स्वामी दयानन्द जी ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। श्याम जी मुम्बई आर्य समाज के पहले सदस्यों में से थे। स्वामी जी के साथ उनके संपर्क में आने की घटना बड़ी मनोरंजक है। 12 जून सन् 1875 को रामानुज संप्रदाय के आचार्य पं0 कमल नयन के साथ स्वामी जी के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा के विषय पर हुआ था। इस शास्त्रार्थ को देखने-सुनने वालों में श्री श्यामजी भी थे। इस समय वह स्वामी जी की विद्वता, ओजस्वी वाणी से अत्यधिक प्रभावित हुए। उनके शिष्य और आर्य समाज के सभासद बने और इसके प्रचार आन्दोलनों में गहरी दिलचस्पी प्रदर्शित करने लगे। स्वामी दयानन्द जी के निर्देश से 1877 में इन्होंने वैदिक धर्म प्रचार के उद्देश्य से एक सभा की। नासिक में धारा प्रवाह संस्कृत में भाषण दिया। मई में पूना और अहमदाबाद गये। जून में बड़ौदा,

भड़ौच, भुज, मांडवी में आर्य समाज का प्रचार किया और 1878 में व्याख्यान देने के लिए लाहौर पहुंचे। इनके संस्कृत भाषणों की सब जगह धूम मच गयी और पंडित समुदाय ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

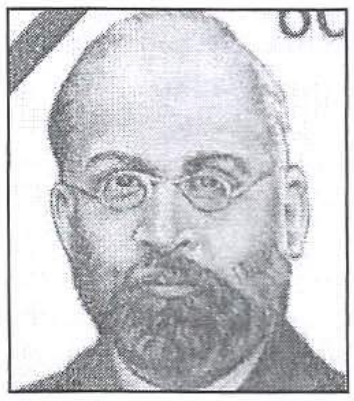

विदेश जाने पर 1874 में ब्रिटिश संस्कृतज्ञ मोनियर विलियम्स से परिचय हुआ। बाद में जब विलियम आक्सफोर्ड में संस्कृत के प्रवक्ता बने, तो श्याम जी ने उच्च शिक्षा एवं बैरिस्ट्री की परीक्षा पास करने के लिए इंग्लैण्ड जाने का निश्चय किया। अपने श्वसुर और मित्रों के सहयोग से वह लन्दन गये। वहां संस्कृत पढ़ने के लिए आक्सफोर्ड के विलियोल कालेज में प्रवेश लिया और कानून के लिए इनर टैम्पिल में दाखिल हुए। 1883 में इन्होंने आक्सफोर्ड से बी0ए0 पास किया। इससे पहले बर्लिन में इन्होंने प्राच्य विद्याविदों के एक सम्मेलन में भाग लिया। 1884 में बैरिस्ट्री की परीक्षा पास की और अगले ही वर्ष भारत लौट आये। जब तक वह विलायत रहे, स्वामी जी इन्हें निरंतर पत्र लिखकर इनसे यह अनुरोध करते रहे कि वे ब्रिटिश शासकों द्वारा भारत में किये जाने वाले अत्याचारों का, तथा मुंशी इन्द्रमणि के साथ हुए अन्याय का मामला पार्लियामेंट में संसद सदस्यों के सम्मुख प्रस्तुत करें। इसी समय से महर्षि स्वामी दयानन्द जी के पत्रों से मन में देशभक्ति, राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता के विचार प्रबल होने लगे।

24 फरवरी 1905 को इनकी अध्यक्षता में इण्डियन होमरूल सोसायटी की स्थापना हुई। इसके उद्देश्य भारत में जनता का, जनता द्वारा तथा जनता के लिए शासन स्थापित करना था। इसी वर्ष स्वामी दयानन्द जी महाराज की प्रबल प्रेरणा से 1 जुलाई 1905 को इन्होंने लन्दन में आने वाले भारतीय विद्यार्थियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के निवास के लिए इण्डिया हाउस भारतीय भवन खोलने की घोषणा की। भविष्य में यही भवन क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्वलित करने का केन्द्रबिन्दु रहा। 1907 में श्री वीरवर सावरकर ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्ण जयन्ती श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ मिलकर मनाई। मार्च 1908 में श्री सावरकर की लन्दन में गिरफ्तारी से श्यामजी ने वहां रहना उचित नहीं समझा और वे पेरिस चले गये। वहीं से स्वतंत्रता की अलख जगाते रहे। उन्होंने गांधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन का प्रबल समर्थन किया। 31 मार्च 1930 को जिनेवा में इस क्रान्तिकारी की मृत्यु हो गयी।

-अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, अमरोहा
फोन : ०५९२२-२६३४१२

वैदिक धर्म व आर्ष संस्कृति के प्रति समर्पित हैं हॉलैण्ड निवासी माता चन्द्रकली सिंह

78 वर्षीय माता चन्द्र कली सिंह आर्यसमाज व वैदिक संस्कृति के प्रति समर्पित हैं। सूरीनाम में जन्मीं माता जी गत लगभग 6 दशक से हॉलैण्ड तथा अन्य यूरोपीय देशों में वैदिक धर्म का प्रचार कर रही हैं। वे अनेक बार भारत पधार चुकी हैं। यहां आकर वे कन्या गुरुकुलों एवं आर्य संस्थाओं की मदद करती हैं। गुरुकुल चोटीपुरा, आर्ष विद्यापीठ, नजीबाबाद के साथ ही अन्य अनेकों संस्थाओं को दान देती रहती हैं। पिछले दिनों भारत यात्रा के दौरान इन्होंने बरनावा (बागपत, उ.प्र.) की यात्रा की तथा वहां एक यज्ञशाला के निर्माण हेतु दान दिया। माता जी प्रतिवर्ष आर्यावर्त केसरी को भी सहयोग प्रदान करती हैं। कोटिशः नमन्।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक

ओ३म्

स्वामी श्रद्धानन्द व पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृती

कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास व नशाखोरी के विरुद्ध

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जींद

दिनांक ९ दिसम्बर, २०१८ प्रातः दस बजे से

स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम ३७०५ अर्बन एस्टेट जींद

❖युवा सम्मेलन ❖नशाखोरी व कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन ❖राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

मुख्य उपस्थिति :

स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, चौधरी हरिसिंह सैनी, आचार्य विजयपाल जी, आचार्य राजेन्द्र जी, विजयकुमार आर्य नरवाना, सुभाष श्योराण जी, बहन प्रवेश आर्या, पूनम आर्या, सहदेव सिंह बेधड़क, कुलदीप आर्य, सुनील शास्त्री आदि।

आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

संयोजक स्वामी रामवेश जी

सम्पर्क 9416148278, 01681 248638

॥ ओ३म् ॥

शिवालिक
गुरुकुल

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES
• Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
• Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
• Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • E-mail : shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • Website : www.shivalikgurukul.com

आओ विचारें कितना अवैदिक है देवी जागरण

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
'वेदभिक्षु'

सर्वप्रथम दो शब्दों पर विचार करें- 'देवी' देव्य: (आप: जलानि) सर्वव्यापक: सर्वआनन्दप्रद: सर्व व्यापक ईश्वर: ये देवी शब्द के अर्थ हैं। गृहस्थाश्रमादि प्रकीर्णों में आदर्श सुशील विदुषी नारी को 'देवी' कहा गया है।- 'यथा' दिव्यगुणप्रदा: (स्त्रिय:) विशेष गुण एवं विद्या सम्पन्न नारी को भी देवी कहा गया है। 'देवी' शब्द से ईश्वर का भी ग्रहण किया गया है- यथा सर्वव्यापक- और सबको आनन्द देने वाला परमात्मा 'देवी' है। 'देवी आप:' वह सर्वव्यापक ईश्वर- ईश्वर एकदेशीय न होकर वह दिव्यशक्ति सर्वत्र व्यापक है- 'आप:' शब्द व्यापक का द्योतक है।

अब 'जागरण' शब्द पर विचार करें- सामान्यत: 'जागरण' शब्द का अर्थ है- जगना और जगाना। कौन जगाएगा और किसे जगाएगा? प्रश्न है- क्या देवी रूपी ईश्वरीय शक्ति सोई हुई है, जिसे जगाना पड़े? क्या देवी सो रही थी? जागार:- अविद्या निद्राय उत्थाय जागृति- अर्थात् अविद्या रूपी निद्रा से उठाकर जगाना- क्या वह पावनतम दिव्य शक्ति रूपी देवी अविद्या रूपी नींद में सोई थी, जो से जगाना पड़ा? यह अन्धविश्वास की पराकाष्ठा है। सर्वथा यही विचारधारा अवैदिक, बुद्धिहीनता की लक्षण है। देवी जागरण के नाम पर पूरे देश में अपार धन, समय और शक्ति का ह्रास हो रहा है। इसके परिणाम से देश की युवा शक्ति पथभ्रष्ट होकर आलस्य-प्रमाद का शिकार होकर गलत दिशा की ओर अग्रसर हो रही है। वैदिक धर्मानुसार जागरण की आवश्यकता भी है, किंतु वह जागरण कैसा हो? ''जागरूक-प्रसिद्धे- सजग होकर अपने कर्तव्य के प्रति जागृत हो। स्वयं जागे और अन्यों को भी स्वकर्तव्य के प्रति जागृत बोध कराये। वेद का यह पावन उद्घोष 'वयम् राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहित:' -हम अपने राष्ट्र में सजग आर्य श्रेष्ठ वीर हैं।

जागरूक के लक्षण- सेचतना, विवेक द्वारा, अनलसा:- आलस्यहीन होकर 'वर्तेमही' हमारा आचरण हो। अविद्या अलस्य निद्रा छोड़कर कर्तव्यारूढ़ रहें। यही संक्षेपत: जागरण है। मद्य-मांस खा-पीकर रात भर भांडों की तरह शोरगुल करने का नाम जागरण नहीं है। यह कृत्य महा पाखण्ड है। जो दिव्य शक्ति परमात्मा रूपी देवी जीव मात्र को सजग कर रही है, हम जीव उसे कैसे जगा सकते हैं? तनिक विचार करो। मूर्ख जनता को ठगने और स्वार्थों की पूर्ति हेतु पाखण्डियों ने यह पाखण्ड फैलाया है। विद्वानों का कर्तव्य है कि वे सामान्य जनता को वैदिक विचारधारा से जोड़कर यथार्थ वैदिक धर्म से जोड़कर इस कुप्रथा से अलग करें।

वेद में तीन देवियों का स्वरूप:- विश्व के बुद्धिजीवी पंडित लोग एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि 'वेद' मानव सृष्टि में सबसे प्राचीन एवं बुद्धिजन्य ज्ञान है- 'वेदोऽखिलोधर्ममूलम्'। वेद समस्त धर्म एवं ज्ञान का आधार है (महर्षि मनु)।

मंत्र- इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो भुव:। वर्हि: सीदंत्वस्रिध:।। (ऋग्वेद- 1.13.9)

पदार्थ- इडा- मातृभाषा, सरस्वती- मातृसभ्यता, और मही- मातृभूमि, ये तिस्र: देवी- तीन देवताएं, मयोभुव:- कल्याण करने वाली हैं। इसलिए ये तीनों देवता (देवियां) बर्हि:- अन्त:करण रूपी आसन में, अस्रिध:- अविलम्ब आसीन हों।

इडा शब्द भाषावाचक है। इडा और इला शब्द इल् धातु से बना है। इडा शब्द के अनेक अर्थ हैं, किंतु अर्थ में मातृभाषा ऐसा लिखा है। जो जिन लोगों की जन्मभाषा होती है, वही उनकी मातृभाषा कही जाती है। 'सरस्वती' शब्द का मूल अर्थ (सरस) प्रवाह से युक्त है। अनादि प्रवाह से गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा जो विद्या (ज्ञान) की संस्कृति और सभ्यता आती है, उस प्रवाहमयी सभ्यता का नाम सरस्वती है।

'मही' शब्द का भाव भूमि है अर्थात् मातृभूमि। यही अर्थ यहां प्रयुक्त है। ये तनों देवियां ऐसी हैं कि जिनकी उपासना हर एक मानव को करनी चाहिए।

इन तीनों दवियों के उपासक राष्ट्र के अन्दर जितने अधिक होंगे, उतना ही राष्ट्र का अधिक अभ्युदय होगा। इसलिए वेद भगवान का कहना है कि इन तीनों देवियों के लिए प्रत्येक के हृदय में स्थान होना चाहिए। वही राष्ट्र अजेय एवं समृद्ध हो सकता है, जहां बचपन से ही राष्ट्रीय जनमानस में इन वैदिक भावों का समावेश कराया जाता है। अन्यत्र वेदों में तथा धर्मशास्त्रों में भी नारी रूप में देवी का तीन प्रकार से निरूपण किया गया है-

1- लक्ष्मी, 2- सरस्वती और दुर्गा, विलक्षण 4-4 हाथों वाली एवं 8-8 हाथों वाली नारी के रूप में सृष्टि में आज तक ऐसी कोई देवियां नहीं हुई और न होंगी। ये देवियां प्रत्येक परिवारों में ही मिलती हैं। नारी के रूप में मां, पत्नी, बहन और बेटियां। यूनान के एक दार्शनिक 'मैकेरिस' छ: सौ वर्ष पूर्व अखण्ड भारत के सिन्ध क्षेत्र में काफी समय तक रहे। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा था- मैं एक बार सिन्ध में एक कृषिफार्म में चल रहा था। वहां एक मजदूर महिला को काम करते देखा। उससे मैंने पूछा- मां जी! 10-12 घण्टे काम करती हैं, आपका घर कहां है? उसने बताया कि मेरा घर कुछ दूरी पर सड़क किनारे एक झोंपड़ी मात्र है। हम गरीब मजदूर हैं। पति भी दूसरे खेत में काम कर रहा है। मैकेरिस ने पूछा- आपकी कोई सन्तान भी है? महिला ने कहा- एक छ: माह का बेटा है, जिसे सुबह काम पर आने से पूर्व दूध पिलाकर आ जाते हैं। मैकेरिस ने कहा- 10-12 घण्टों तक बच्चा भूखा ही रहता है क्या? महिला ने कहा- नहीं, मैं खेत-मालिक से दो घण्टे की छुट्टी लेकर दोपहर में दूध पिला आती हूं। जब बेटा भूख से रोने लगता है, तब मुझे पता लग जाता है, मेरे स्तनों से दूध टपकने लगता है। तभी चली जाती हूं। मैकेरिस ने नोट किया कि मां कितनी महान है। मैकेरिस ने पूछा- तुम पर अपना सम्पत्ति आदि कुछ भी नहीं है? बेटे के विषय में क्या विचार है? महिला बोली-बाबू जी! सोचते हैं कि शरीर स्वस्थ बना रहे और कठोर मेहनत से कमाकर कुछ सम्पत्ति जोड़कर अपने बच्चे को अपने घर-बार, जमीन-जायदाद से संपन्न बना दें। मैकेरिस ने नोट किया कि यही मां तो लक्ष्मी है। ऐसी ही चर्चा चलते मैकेरिस ने पूछा- पढ़ी-लिखी भी हो? महिला ने सिर हिलाकर ना कर दिया। फिर बेटे के लिए क्या सोचा? बाबू जी वही सोच है, कुछ कमाकर अपने बेटे को खूब पढ़ा-लिखा कर खूब विद्वान बना दें। मैकेरिस ने नोट किया मां ही सरस्वती भी है। अब मैकेरिस ने कहा- माता जी एक प्रश्न और है कि तेरे बेटे, पति और तेरी अस्मिता पर कोई उंगली उठाये, तो तू क्या करेगी? महिला खड़ी हो गयी और गरज कर बोली- जो कोई भी मेरे बेटे, पति और मेरी अस्मिता पर हावी होगा, उसका अन्तिम सांस तक मुकाबला करूंगी, उसका खून पी जाऊंगी। मैकेरिस ने नोट किया- 'दुर्गा' शक्ति की देवी भी यही है। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि नारी रूप में हमारी माताएं, बहनें, पत्नियां व पुत्रियां ही सच्ची देवियां हैं। और इन देवियों में जो दिव्यताएं हैं, वे उस महान दिव्य देवी परमात्मा की शक्ति ही काम कर रही है।

जिसमें समस्त ज्ञान हो, उसे सरस्वती कहते हैं। परब्रह्म परमेश्वर में समस्त ज्ञान (विद्याएं) है, इसलिए परमेश्वर का नाम सरस्वती भी है। ईश्वर से ही वेदविद्या का प्रकाश हुआ है। सब विद्याओं का भण्डार वेद ही है। अत: वेद विद्या भी सरस्वती है। 'पावका न: सरस्वती:' विद्या देवी पवित्र करती हमें सदा। विद्या ज्ञान का महासागर है। उस सागर में गोतखोर ही विद्या रूपी रत्न प्राप्त करते हैं। 'चेतयन्ती सुमतीनाम्'। साधक लोगों को वह बुद्धि माता सरस्वती सचेत करती है, पथभ्रष्ट होने से बचाती है, और सुपथ पर प्रेरित करती है। जीवन के हर संघर्ष में तीनों देवियां- सरस्वती, इडा और मही मानव की रक्षा करती हैं। ये तीनों प्रभुप्रदत्त तीन शक्तियां हैं। अलग से काल्पनिक देवियां नहीं हैं। ईश्वरभक्त अपने इष्ट प्रभु को सदा माता, पिता, बन्धु आदि के रूप में उपासता है, जो भक्त की हर पवित्र मनोवांछा पूर्ति करता है।

बन्धुओ! देवी जागरण के नाम पर जो पाखण्ड फैला है, उससे अनेक भयंकर दुर्घटनाएं देखने को मिलती हैं। 1980 के दशक में पंजाब के एक नगर में रात में जगराता हो रहा था। मद्य, मांस का सेवन चल रहा था। अन्य भक्त नाच-नाच कर चिल्ला रहे थे- जय माता की। आतंकवादियों ने गोलियां चलाकर 20 लोगों (अंधभक्तों) को मार दिया था। काफी सम्पत्ति लूट ले गये थे। आइए विचार करें हम किसे जगा रहे हैं? कौन सोया है? अरे! गम्भीरता से सोचो- ईश्वरीय शक्ति देवी तो सदा जाग रही है। हम जगाने वाले ही खुद सो रहे हैं। जागो, कर्तव्य को पहचानो, पाखण्डों से बचो और बचाओ। देवी-जागरण एकदम अवैदिक व पाखण्ड है।

उत्तिष्ठत अवपश्यत! उठो, जागो, उस परमात्मा दिव्य शक्ति के सच्चे उपासक बनो। यही कल्याण का मार्ग है, जिस पर चलकर उज्ज्वल भविष्य संभव है। पावन वेदमंत्रों के प्रवचन, वेदानुष्ठान और वेदकथाएं कराकर पुण्य के भागी बनो। पाखण्ड एक भयंकर अभिशाप है, जो मानवता का शत्रु है। ''मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।।''

आर्यसमाज, बिहारीपुर
ढाल, बरेली
मोबा. : ९४५६२१९६५२,
९७५९५२७४८५

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सान्निध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण निःशुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मदद दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

वर चाहिए

वैदिक विचारों की संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा- बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।
सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

दिल्ली निवासी सुश्री शैली, तलाकशुदा, कद 5'2'' रंग गोरा, जन्म 27/10/1983 एम0ए0बी0एड0, एम0सी0डी0 दिल्ली में असिस्टेंट टीचर, पूर्णतः शाकाहारी, पिता सरकारी सेवा से रिटायर्ड, एक भाई हेतु सुयोग्य व्यवसायी/ सेवारत वर की आवश्यकता है। कोई जाति-बन्धन नहीं। दहेज रहित विवाह। सम्पर्क करें- 9899252879, 9873133647

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्म- 12 मई 1992, कद- 5 फुट 6 इंच, शिक्षा- बी.टेक, हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स में मैनेजर युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए।
सम्पर्क- 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- 40 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 09457274984

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु-28 वर्ष, कद- 5 फुट 8 इंच, शिक्षा- एम.बी.ए., प्रोफेसर, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 9456804666

धनौरा का प्रतिष्ठित आर्य अग्रवाल वैश्य परिवार, संस्कारित, आयु-35 वर्ष (तलाकशुदा), कद- 5 फुट 10 इंच, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी. हिन्दी, स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में प्रवक्ता हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क- 8923285659

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

ऋग्वेद

।। ओ३म् ।।

यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● **पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प**

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

सत्यार्थ प्रकाश
का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित
साइज़ - 18 x 23 x 8
मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर **दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ**

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद

अथर्ववेद

केरल के आर्य प्रचारक का पत्र

सबरीमाला का षड्यंत्र

मैं उत्तर भारत के सभी आर्य बन्धुओं का ध्यान केरल की तरफ ले जाना चाहता हूं, जहां हिन्दुओं को कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सबरीमाला अयप्पा मन्दिर केरल का एक अन्तरराष्ट्रीय स्तर का हिन्दू मन्दिर है। करोड़ों भक्त हर वर्ष इस मन्दिर में दर्शनों के लिए आते हैं। 1950 से पूर्व ही ईसाई संगठनों एवं कम्यूनिस्टों की इस पवित्र हिन्दू-स्थल को नष्ट करने की व्यवस्थित योजना थी। 1950 में एक बार इस मन्दिर में आग भी लगा दी गयी थी। यह मन्दिर केरल के घने जंगलों के बीच स्थित है। ईसाई लगातार स्थानीय एवं आदिवासियों का धर्मपरिवर्तन करने में लगे हुए हैं। पर सबरीमाला मन्दिर पर हिन्दुओं की निष्ठा उन्हें धर्मपरिवर्तन से बचाए रखती है। इस मन्दिर के कुछ नियम हैं, जैसे- 10 से 50 वर्ष की महिलाओं को मन्दिर में प्रवेश की अनुमति नहीं है एवं आज तक उनके प्रवेश के लिए अयप्पा श्रद्धालुओं ने कोई मांग भी नहीं की है।

कुछ समय पहले उत्तर भारतीय कुछ नारीवादी एवं गैर हिन्दू अधिवक्ताओं ने युवा महिलाओं के मन्दिर में प्रवेश की मांग के लिए सुप्रीम कोर्ट में रिट याचिका दायर की। केरल की कम्यूनिस्ट सरकार ने इस याचिका का समर्थन किया। सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय में सभी युवा महिलाओं को अपने मासिक धर्म के दौरान भी मन्दिर में प्रवेश की अनुमति दे दी। इस निर्णय से केरल में कोहराम मच गया है। महिलाएं इस निर्णय के विरुद्ध सड़कों पर विरोध कर रही हैं। सरकार निर्दयतापूर्वक उनके विरुद्ध दमनचक्र चला रही है। लगभग 4000 श्रद्धालु गैर जमानती वारण्ट से पुलिस हिरासत में जेल भेज दिये गये हैं। रेहाना फातिमा जैसी गैर हिन्दू कार्यकर्ताओं ने पुलिस कमाण्डो की सहायता से मन्दिर में प्रवेश करने का प्रयास किया, जिसकी चर्चा सभी समाचार चैनलों पर प्रसारित भी हुई।

उत्तर भारत के हिन्दू सुधार आन्दोलन में लगे अनेक संगठन जैसे आर्य समाज के बन्धु भी सोच रहे होंगे कि यह तो लिंग समानता का विषय है एवं मूर्तिपूजकों पर ही यह निर्णय लागू होता है, हमें इससे क्या लेना-देना। परन्तु मैं यह बताना चाहता हूं कि ऐसा बिल्कुल नहीं है। केरल में अनेक ऐसे मन्दिर हैं, जहां पुरुषों का प्रवेश वर्जित है। इसी तरह कई मन्दिरों में महिलाएं नहीं जा सकतीं। उत्तर भारत ऐसा नहीं है। परन्तु केरल की परम्परा के अनुसार केवल पुजारी ही मन्दिर के पवित्र गर्भगृह में प्रवेश कर सकते हैं। यह हम जानते हैं कि यह ठीक नहीं है, किंतु हमारे अस्तित्व पर सोची समझी चोट है। अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए हम आज एक नहीं हुए, तो कल आर्य समाज का प्रचार केरल में करना मेरे लिए भी कठिन हो जाएगा। मैं बहुत विकट परिस्थितियों में यहां आर्य समाज और गुरुकुल चला रहा हूं। परन्तु हम आपस में परम्पराओं में सुधार कर लेंगे, किंतु षड्यंत्र से सचेत रहें।

-के०एम० राजन,
आर्य प्रचारक, केरल
फोन- ७९०७०७७८९१

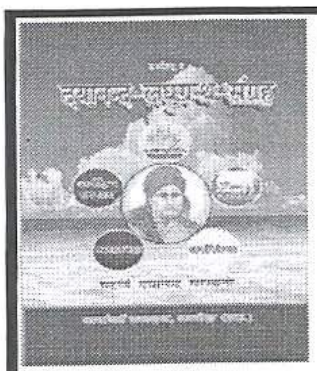

अवश्य पढ़ें - आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा
प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक
दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह
इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रुपये

पुस्तकें वी०पी०पी०, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांस्पोर्ट से भेजी जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।

पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

हमारी गौशालाएं

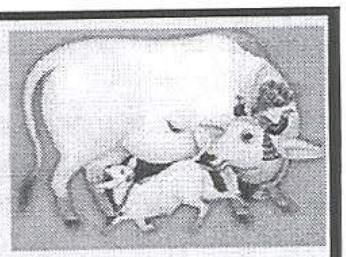

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गऊ संवर्द्धन तथा संरक्षण के लिए सर्व प्रथम सन् 1879 में हरियाणा के रामपुरा, रेवाड़ी में गौशाला का स्थापना की। यह विश्व की पहली गौशाला है। हमारे यहां 'गावो विश्वस्य मातरः' कहते हुए गाय को सबकी माता की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इस **'हमारी गौशालाएं'** स्तम्भ के अन्तर्गत आर्यावर्त केसरी द्वारा भारतवर्षीय गौशालाओं के विषय में परिचयात्मक सामग्री प्रकाशित की जा रही है। तद्नुसार विज्ञजनों की ओर से सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित है। धन्यवाद,

-सम्पादक

स्वास्थ्य

भूलकर भी न पिएं फ्रिज का ठण्डा पानी

मित्रो! कितनी भी गर्मी पड़े, फ्रिज का ठण्डा पानी या बर्फ का मिलाया हुआ पानी कभी मत पियो। मित्रो, पहले यह जान लीजिए कि आयुर्वेद के अनुसार ठण्डे पानी की परिभाषा क्या है। शरीर का तापमान है 37 डिग्री सेल्सियस। 37 डिग्री के नीचे का सभी पानी ठण्डा है। 37 डिग्री तक पानी शरीर सहन कर सकता है। जब भी आप फ्रिज का ठण्डा पानी पीते हैं, तो गर्म पेट में ठण्डा पानी जाता है। अब पेट आपका गर्म है और पानी ठण्डा। तो अन्दर जाकर झगड़ा होता है। या तो पेट पानी को गर्म करता है, या पानी पेट को ठण्डा करता है। आप एक मिनट के लिए मान लीजिए आपने बहुत ठण्डा पानी पिया है और पानी ने पेट का ठण्डा कर दिया। पेट ठण्डा होते ही हृदय ठण्डा हो जाएगा, क्योंकि पेट और हृदय का आपस में संबन्ध है। हृदय के ठण्डा होते ही मस्तिष्क ठण्डा हो जाएगा। क्योंकि इन दोनों का भी आपस में संबन्ध है। और मस्तिष्क के ठण्डा होते ही शरीर ठण्डा हो जाएगा। वे सब लोग, जो आपको लिपट कर प्रेम करते हैं, वे आपको छूना भी पसंद नहीं करेंगे, क्योंकि शरीर ठण्डा हो गया। वे केवल एक ही बात बोलेंगे कि जल्दी लेकर जाओ, क्यों रखा हुआ है, अन्तिम संस्कार कब है? क्योंकि यहां शरीर के ठण्डा होने का अर्थ आपकी मृत्यु से है। तो मित्रो, यह ठण्डा पानी पीने की गलती मत कीजिए।

अब इस सारी बात का दूसरा भाग समझिए।

जब बहुत ठण्डा पानी आप पियेंगे तो पेट उस पानी को गर्म करेगा, क्योंकि उसे आपको जिंदा रखना है। ये तो भगवान की व्यवस्था बनाई हुई है। लेकिन गर्म करने के लिए उसको ऊर्जा चाहिए। अब ऊर्जा कहां से आएगी? ऊर्जा आएगी रक्त में से। तो सारे शरीर का खून पेट में आएगा। अब थोड़ी देर के लिए कल्पना कीजिए कि सारे मस्तिष्क का खून पेट में चला गया और हृदय का खून पेट में चला गया। आंतों का खून पेट में आ गया। तो हर अंग को खून की कमी आएगी। मस्तिष्क को अगर 3 मिनट ब्लड सप्लाई रुक गयी, तो ब्रेन डैड हो जाएगा। इस तरह हृदय को एक से डेढ़ मिनट ब्लड सप्लाई रुक गयी तो हृदय डैड हो जाएगा। बाकी सभी अंग तो ऐसे ही खत्म हो जाएंगे। इसलिए कहा गया है कि ठण्डा पानी पीना बहुत ठण्डा रिस्क लेने के बराबर है।

अब इस सारी बात का तीसरा भाग समझिए।

हमारे शरीर में दो आंतें होती हैं- छोटी आंत, और बड़ी आंत। बड़ी आंत का काम हमारे शरीर में से मल को बाहर निकालना है। जो भी हम खाते हैं, पचने के बाद जो अवशेष बचता है, वह मल के रूप में बड़ी आंत द्वारा बाहर निकलता है। बड़ी आंत देखने में बिल्कुल एक खुले पाइप की तरह होती है। अब जैसे ही एकदम से आप ठण्डा पानी पीते हैं, यह बड़ी आंत एकदम से सिकुड़कर बंद हो जाती है। अब बार-बार आपने ठण्डा पानी पी-पी कर इसे पूरा बन्द कर दिया। तो सुबह आपको स्टूल पास नहीं होगा, टायलेट नहीं आएगी। आप जोर लगा-लगा कर पागल हो जाएंगे, लेकिन पेट साफ नहीं होगा। अर्थात् आपको कब्जियत का रोग हो जाएगा। आयुर्वेद में कब्जियत को बीमारियों की जड़ कहते हैं। अगर आपको कब्जियत का रोग हो गया और कुछ लम्बे समय तक रहा, तो एक-एक करके आपको सभी बमारियां आएंगी। यूरिक एसिड, कोलस्ट्रोल, हार्ट ब्लाकेज, शुगर आदि। इसलिए फ्रिज का ठण्डा पानी आपके शरीर के लिए बहुत ही ज्यादा खतरनाक है।

मित्रो, अमेरिका और यूरोप वाले बहुत अधिक ठण्डा पानी पीते हैं। वे पानी को 5-6 दिन तक फ्रिज में रखते हैं। फिर उसमें आइस क्यूब डाल डाल कर पीते हैं। इसका परिणाम होता है कि सुबह एक-एक घण्टे वे टायलेट में बिताते हैं, पेट साफ नहीं होता। कभी आप उनसे पूछिए कि आपने ये टायलेट सीट कोबेट सीट अर्थात् बैठने वाली क्यों बनवायी है? भारतीय सीट क्यों नहीं बनवाई? आपके जवाब मिलेगा कि भाई, भारतीय डिजाइन वाली सीट पर आप 5 मिनट से ज्यादा नहीं बैठ सकते। क्योंकि जो पोजिशन है वह 5 मिनट में ही थका देती है। हम लोगों को घण्टा-घण्टा भर बैठना पड़ता है, क्योंकि पेट साफ नहीं होता। इसलिए यह वैस्टर्न सीट ही चुनते हैं। इतना ही नहीं, ये लोग टायलेट में पुस्तक, अखबार, मैगजीन आदि भी रखते हैं, क्योंकि घण्टे भर बैठना है, तो टाइम पास के लिए भी तो कुछ चाहिए। वैसे टायलेट किताबों या अखबार पढ़ने के लिए नहीं बना, लेकिन उन लोगों की मजबूरी है। अब हमारे देश के कुछ पढ़े-लिखे मूर्खों ने उनकी नकल कर टायलेज में अखबार, किताबें आदि लेकर जाना शुरु कर दिया और अब ऐसा करके वे अपने आप को आधुनिक समझने लगे हैं। मगर यह गलत है। मित्रो, बिना सेचे-समझे जब किसी की नकल की जाती है तो ऐसा ही होता है। उन लोगों की मजबूरी को हम अपना फैशन बना रहे हैं। बड़ी विडम्बना है।

मित्रो, इन सारी समस्याओं का मूल कारण है ठण्डा पानी। ज्यादा ठण्डा पानी आप कभी मत पीना। ह आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। आपको अगर पीना है, तो मिट्टी के घड़े में रखे पानी को पियें, क्योंकि मिट्टी के घड़े में रखे पानी को आप जब भी चैक करेंगे, उसका तापमान 33 से 36 डिग्री के आसपास होगा। शरीर का तापमान 37 डिग्री होने के कारण यह शरीर के तापमान के लगभग बराबर ही रहता है। इसलिए घड़े का पानी कभी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकता। यही कारण है कि सदियों पहले आयुर्वेद में कहा गया है कि घड़े का पानी सबसे अच्छा होता है और हमारे देश में पुराने समय से लोग घड़े का पानी पीते आए हैं।

इसका एक अहम कारण और भी है। मिट्टी का घड़ा हमारे देश में करोड़ों गरीब कुम्हारों द्वारा बनाया जाता है। इससे उनकी रोजी-रोटी जुड़ी है। मगर जबसे प्रेशर कुकर, प्लास्टिक की बोतलें, थर्माकोल के गिलास, फ्रिज आदि उपकरण आये हैं, तब से देश में करोड़ों कुम्हारों का रोजगार छिन गया है। इतना ही नहीं, दीवाली पर पहले लोग मिट्टी के लिए दीये अपने घरों में लाते थे। मगर आज उनकी जगह भी विदेशी लाइट्स ने ले ली है। दीवाली जैसे त्योहार पर हम अपनी लक्ष्मी विदेश को (उनका सामान खरीदकर) दे देते हैं और रात में पूजा करते हैं। कामना करते हैं कि हमारे घर में लक्ष्मी सुख और समृद्धि लेकर आए। यदि हम सभी पुरानी परम्परा को जवित रखते हुए दोबारा से घड़े का पानी पीना आरम्भ करें, तो न केवल हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा, बल्कि इससे देश के लाखों गरीब परिवारों को रोजगार भी मिलेगा।

साभार- डॉ० संजीव गोयल
प्रस्तुति- अजय कुमार आर्य
अरविन्द बुक एजेंसी, मेरठ

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर, विजिटिंग कार्ड आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध है।

-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, अमरोहा
मोबा. : 9412139333

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ तीन पर देखें। ३

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

- डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक (9412139333)

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी- सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

विस्तृत जानकारी पृष्ठ- ९

सुमन कुमार वैदिक
8368508395, 9456274350
डॉ. अनिल रायपुरिया
9837442777

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा स्थापित सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि में सहयोग देकर घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य